साप्ताहिक कृषि समाचार-पत्र

खेती संदेश

मूल्य : 6/- रुपए

All Subject to Patiala Jurisdiction.

WEEKLY KHETI SANDESH

E-mail : khetisandesh2025@gmail.com

RNI Regd. No. PBBIL/25/A0210 • Chief Editor : Parminder Kaur • Issue Dt. 08-09-2025 • Vol.1 No.3 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • Mob. 90410-14575 • Page 12

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने पंजाब के बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा किया

स्थिति भयानक, फसलें हुई बर्बाद, किसान भाई-बहन चिंता ना करें

पंजाब देश की ढाल बनकर रहा है, पंजाब के किसानों और जनता को पूरी राहत पहुंचाएंगे

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने पंजाब के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने अमृतसर, कपूरथला और गुरदासपुर जिले के गांवों में जाकर किसानों से सीधा संवाद किया और पानी से भरे खेतों में उतरकर फसलों के नुकसान का जायजा लिया। इस दौरान किसानों ने केंद्रीय मंत्री को फसलों के भारी नुकसान की जानकारी दी, जिस पर शिवराज सिंह ने कहा कि किसान भाई-बहन चिंता ना करें, सरकार उनके साथ है।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के सुबह अमृतसर पहुंचने पर बाढ़ की स्थिति को लेकर पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने केंद्रीय मंत्री से हवाई अड्डे पर भेंट की और उन्हें बाढ़ से जुड़ी विस्तृत रिपोर्ट सौंपी, वहीं अन्य पदाधिकारियों ने भी केंद्रीय कृषि मंत्री को बाढ़ की गंभीर स्थिति के बारे बताया।

इसके तत्काल बाद, बाढ़ग्रस्त इलाकों का दौरा करते हुए केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि स्थिति बहुत गंभीर है, संकट भयानक है। जलप्रलय के कारण फसलें डूबी हुई है और पूरी तरह से तबाह और बर्बाद हो गई है। लगभग 1,400 गांव पूरी तरह प्रभावित है। 26 अगस्त से यहां खेतों में पानी भरा हुआ है। रावी का पानी खेतों में बह रहा है। पांव के नीचे मिट्टी नहीं, सिल्ट है, जो जमा हो गई है। यह फसल तो खत्म हो गई है, अगली फसल पर भी संकट है। दर्द और नुकसान का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि स्थिति देखकर मन द्रवित होता है, लेकिन इस समस्या से अपने किसान भाई-बहनों को जरूर बाहर निकालेंगे। यह चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हरसंभव प्रयास किया जाएगा और राहत पहुंचाने के लिए पूरी मदद की जाएगी।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि पंजाब में स्थिति का आकलन करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर केंद्र सरकार ने दो उच्चस्तरीय टीमें भेजी हैं जिनमें कृषि, ग्रामीण विकास, सड़क, ऊर्जा, वित्त और जल-शक्ति मंत्रालयों के अधिकारी शामिल हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ये टीमें प्रभावित इलाकों का दौरा कर स्थिति का आकलन करेंगी और अपनी रिपोर्ट केंद्र सरकार को सौपेंगी।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि गांवों में जाकर लोगों से संवाद कर जमीनी हालात को समझा जाएगा और विस्तृत रिपोर्ट प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को सौंपी जाएगी। राज्य सरकार भी अपनी तरफ से आकलन करेगी।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि पंजाब पर पूरे देश को गर्व है, यह राज्य हमेशा संकट की घड़ी में देश की ढाल बनकर खड़ा रहा है। मैं यही कहना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री जी के निर्देश पर आया हूं और संकट की इस घड़ी में अपने पंजाब के साथ, अपने पंजाब के किसान भाइयों और बहनों के साथ, पंजाब की जनता के साथ सरकार डटकर खड़ी है। सरकार इस आपदा से किसानों को जरूर बाहर निकालेगी। उन्होंने, पंजाब के स्थानीय लोगों की इस बात के लिए तारीफ की कि वे ऐसे समय में पूरी तरह से सेवा के कार्यों में तत्परता से जुटे हुए हैं।

पंजाब त्रासदी

बाढ़ पीड़ितों की मदद हेतु हमारी जवाबदेही

पंजाब में बाढ़ का संकट बेहद गंभीर है। फिलहाल चुनौती जीवन रक्षा की है। पीड़ितों के लिए भोजन व साफ पानी की है। उनको राहत देना व पुनर्वास प्राथमिकता हो। पीड़ितों को समय रहते मुआवजा मिले। बाढ़ के बाद की चुनौतियों के मुकाबले को सरकार व समाज मिल कर काम करे।

पंकज चतुर्वेदी

पंजाब इस समय भीषण बाढ़ की त्रासदी झेल रहा है, जहां गांव जलमग्न हो गए हैं, घर बर्बाद हो गए हैं और खेतों में फसल की जगह बालू भर गई है। यह संकट केवल पानी उतरने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि भविष्य में समस्याएं और गहराएंगी।

इस समय खेती और पशुधन से सम्पन्न पंजाब में नदियों-नालों में आए उफान के कारण तीन लाख एकड़ से ज्यादा फसली ज़मीन को नुकसान हुआ है। सबसे ज्यादा असर धान, मक्का, सब्जियों और अन्य खरीफ फसलों पर हुआ है। सीमा से लगे गुरदासपुर, पठानकोट, होशियारपुर, जालंधर, फाज़िल्का, कपूरथला व आस-पास के गांवों में घर, सड़क और दुकानें पानी में डूब गई है। अब तक करीब 2.56 लाख से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं।

बाढ़ प्रभावित पंजाब में भारी तबाही के चलते बड़ी मात्रा में राहत सामग्री की आवश्यकता है। भोजन की व्यवस्था हो रही है, लेकिन साफ पेयजल की भारी कमी है, क्योंकि वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बंद हैं और गंदा पानी पीने से हैजा फैलने का खतरा है। रोज़ लाखों बोतल पानी, बिना बिजली वाले फिल्टर, बड़े आर.ओ., इन्वर्टर, बैटरी मोमबत्तियां, माचिस और छोटे जनरेटर की तत्काल जरूरत है, क्योंकि बिजली बहाल होने से लंबा समय लगेगा। साथ ही महामारी रोकने के लिए फिनाइल, क्लोरीन पाउडर, मच्छर मारने की दवाइयों व क्रीम की भी तुरंत आवश्यकता है।

बारिश थमने के बाद सबसे बड़ी चुनौती होगी बाढ़ ग्रस्त इलाकों से पानी, कीचड़, मलबा और मरे जानवरों का निस्तारण करना। इसके लिए बड़े पम्प, जे.सी.बी., डंपर, ईंधन, सफाई उपकरण व सुरक्षात्मक समान की तत्काल जरूरत है। सरकारी तंत्र के पास इतनी मशीनरी तुरंत उपलब्ध नहीं होती, इसलिए समाज के लोगों को चाहिए कि वे ऐसे उपकरण राज्य सरकार को भेट करें, ताकि पुनर्वास कार्य तेज़ी और प्रभावी ढंग से हो सके।

राहत कार्यों में बड़ी व्यवस्थाओं के साथ-साथ पीड़ित आम लागों की व्यक्तिगत जरूरतों की अनदेखी नहीं होनी चाहिए। मधुमेह, ब्लडप्रेशर, थायराइड जैसे रोगियों को नियमित दवाएं चाहिए, जो बाढ़ में नष्ट हो चुकी हैं। मानसिक तनाव और सीमित राहत सुविधाओं से अव्यवस्थित लोग बढ़ रहे हैं। ऐसे में दवाईयां, पेयजल, डेटॉल, फिनाइल, क्लोरिन टैबलेट्स, संक्रमण व बुखार की दवाएं, ग्लकोज, सेनाइन जैसी चीज़ें तत्काल आवश्यक है। पुराने कपड़े या अनाज जैसी चीज़ें फिलहाल उपयोगी नहीं होंगी।

सम्पन्न लोगों को आगे बढ़ कर पुनर्निर्माण में योगदान देना होगा - जैसे दूर-दराज के गांवों के लिए सीमेंट, लोहा जैसी निर्माण सामग्री भेजना। करीब ढाई लाख लोग पूरी तरह बेघर हो गए हैं, बाज़ार-वाहन तबाह हो चुके हैं। ऐसे में बीमा दावों का त्वरित और सही निपटारा बड़ी राहत हो सकता है। लेकिन राज्य मशीनरी खुद संभलने में व्यस्त है, इसलिए शिक्षित स्वयंसेवकों की जरूरत है, जो नुकसान का सही आंकलन कर, बीमा कम्पनियों पर भुगतान के लिए दबाव बना सकें और सरकार की योजनाओं का लाभ प्रभावितों तक पहुंचा सकें।

बाढ़ के बाद जीवन को फिर से पटरी पर लाने में सबसे बड़ी बाधा होगी, सरकारी राहत पाने की प्रक्रिया, क्योंकि पैसा उन्हीं के खातों में आएगा जिनके पास आधार कार्ड है। जिनका सब कुछ बाढ़ में बह गया, उनके पास पहचान पत्र भी नहीं बचे। ऐसे में राहत की रकम देर से मिलना व्यर्थ होगा। इस स्थिति में बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों की जरूरत है, जो दूर शहरों में बैठ कर प्रभावितों के आधार जैसे दस्तावेज ऑनलाइन निकाल कर उन तक पहुंचा सकें, ताकि समय पर उन्हें मदद मिल सके।

हालात कुछ सुधरने पर शिक्षा की जरूरत सामने आएगी, लेकिन तब तक दो लाख से अधिक बच्चों के स्कूल, बस्ते, किताबें सब कुछ बाढ़ में बह चुके होंगे। ऐसे में यदि हर घर से त्योहारों के तोहफों के रूप में एक-एक बच्चे के लिए बस्ता, किताबें, स्टेशनरी, टिफिन बॉक्स और पानी की बोतल भेजी जाए, तो पंजाब के भविष्य को संवारने में मदद मिलेगी। पाठ्य पुस्तकों की पुन: छपाई, फर्नीचर व ब्लैकबोर्ड की व्यवस्था और बच्चों के पोषण के लिए बिस्किट व सूखे मेवे जैसे सुरक्षित खाद्य पदार्थों की भी तत्काल आवश्यकता है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर संस्थागत और व्यक्तिगत प्रयास जरूरी हैं।

यदि आवश्यकतानुसार मदद न मिले तो यह समय व संसाधन का नुकसान ही है। आज तक इस बात पर कोई दिशा-निर्देश बनाए ही नहीं गए कि आपदा की स्थिति में किस तरह की तात्कालिक तथा दीर्घकालिक सहयोग की आवश्यकता होती है। ऐसे संकट के समय में एक सच्चा नागरिक वही है, जो अपने संकटग्रस्त देश वासियों के साथ खड़ा होता है।

रेशम उत्पादन – केन्द्रीय सिल्क बोर्ड से मिली मंजूरी, पंजाब ने बनाई 1.41 करोड़ की योजना

होशियारपुर में भी होगा रेशम उत्पादन, विभाग ने लगाए 10 हज़ार शहतूत, 51 किसानों को मिलेगी मुफ्त ट्रेनिंग

पंजाब में पठानकोट के बाद कंडी क्षेत्र में शामिल होशियारपुर ज़िले में अब रेशम उत्पादन किया जाएगा। केन्द्रीय सिल्क बोर्ड से इसकी मंजूरी मिल गई है। इसके साथ ही मुकेरियां के साथ लगते निक्कुचक व जुगियाल गांव के 51 प्रगतिशील किसानों के चेहरों पर रौनकें लौट आई है, जिन्होंने शहतूत के पेड़ों की खेती के साथ इसकी शुरूआत की है। इनको रेशम उत्पादन का मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाएगा।

पंजाब के चीफ कंजरवेटर (नार्थ व शिवालिक सर्कल) डॉ. संजीव कुमार तिवाड़ी के मुताबिक, राज्य सरकार ने होशियारपुर ज़िले में सेरीकल्चर फार्मिंग प्रोजेक्ट (रेशम उत्पादन परियोजना) को बढ़ावा देने के लिए 1 करोड़ 41 लाख 88 हज़ार रुपए की योजना तैयार की है। जंगलात विभाग पठानकोट व होशियारपुर के बाद जल्द ही पहले चरण में नवांशहर व मोहाली के कंडी इलाकों और अगले चरण में अन्य ज़िलों में रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सिल्क बोर्ड से मंजूरी दिलाएगा।

दक्षिण भारत के साथ-साथ पश्चिमी बंगाल और झारखंड के बाद पंजाब ने पठानकोट जिले मेंरेशम के धागे तैयार करने की योजना पर काम शुरू किया था। जंगलात विभाग के साथ मिलकर 116 किसानों ने इसकी शुरूआत कर 6.5 क्विंटल रेशम उत्पादन कर एक मिसाल कायम की। इसे देख जंगलात विभाग ने अब होशियारपुर ज़िले में इसकी शुरूआत करने जा रहा है। उसने निक्कूचक गांव में 25 एकड़ क्षेत्र में शहतूत के 10 हज़ार पौधे लगाए है। विभागीय अधिकारियों के अनुसार, यहां पहले चरण में 4 क्विंटल रेशम उत्पादन की योजना पर काम किया जा रहा है। वहीं, पंजाब के वन मंत्री लालचंद कटारुचक का कहना है कि सरकार का मकसद राज्य के किसानों की आमदनी को बढ़ावा देना है।

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक और उपभोक्ता है। यहां वर्ष 2023-24 के दौरान 38,913 टन का उत्पादन हुआ है। भारत एकमात्र ऐसा देश है, जो सभी 4 प्रकार के रेशम (शहतूत, तसर, एरी और मुगा) से समृद्ध है। यहां रेशम उत्पादन मुख्य रूप से कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, असम और पश्चिम बंगाल में होता है। कर्नाटक शहतूत रेशम का सबसे बड़ा उत्पादक है, जहां वर्ष 2024 में सर्वाधिक 25300 टन शहतूत रेशम, आंध्र प्रदेश 13300 टन शहतूत व तसर और असम में 6400 टन शहतूत व तसर रेशम उत्पादन हुआ। असम मुगा और एरी रेशम के लिए प्रसिद्ध है।

खरीफ की फसलों में धान एक प्रमुख फसल है। धान की फसल को कई प्रकार की बीमारियों व कीट आदि की समस्याओं से गुजरना पड़ता है। कभी–कभी यह बीमारियां इतना भयंकर रूप ले लेती हैं कि पूरी की पूरी फसल नष्ट हो जाती है। कुरुक्षेत्र ज़िले में धान की फसल पर 8–9 बीमारियों का प्रकोप पाया जाता है। अगर समय रहते इन बीमारियों के लक्षण पहचान व उनकी रोकथाम की जाए, तो नुकसान होने से बचाया जा सकता है।

धान की बीमारियां एवं उनका प्रबंधन

डॉ. फतेह सिंह, ज़िला विस्तार विशेषज्ञ (प्लांट पैथोलॉजी), कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र
डॉ. वीरसैन, सहायक प्रोफैसर, कृषि अर्थशास्त्र, कौल (कैथल)
डॉ. मनोज कुमार, ज़िला विस्तार विशेषज्ञ (कृषि वानिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र

1. खैरा रोग (ज़िंक की कमी) : यह रोग ज़िंक सल्फेट (जस्त) की कमी के कारण होता है। इस रोग के लक्षण पौधशाला और रोपाई की गई फसल दोनों में पाए जाते हैं। रोगी पौधों की पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे बनते हैं, जो बाद में कत्थई रंग के हो जाते हैं। निचली पत्तियां पीली हो जाती हैं। इस रोग की वजह से कल्ले कम निकलते हैं तथा पौधा बौना रह जाता है।

रोकथाम : (क) ज़िंक सल्फेट (21 प्रतिशत) की 10 किलोग्राम मात्रा को प्रति एकड़ डालें।

(ख) आधा किलोग्राम ज़िंक सल्फेट 25 किलोग्राम यूरिया को 100 लीटर पानी में मिला कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

2. पद गलन व बकानी : बासमती किस्मों में इस रोग का प्रकोप अधिक पाया जाता है। यह बीज जनित एवं मृदा जनित रोग है। इसके लक्षण नर्सरी व रोपाई की हुई फसल दोनों में पाए जाते हैं। रोग ग्रस्त पौधे पीले, पतले तथा स्वस्थ पौधों की अपेक्षा लम्बे हो जाते हैं और ज़मीन की सतह से गल कर सूख जाते हैं। इसके अलावा पानी की सतह से ऊपर की गांठों से जड़ निकलती है व रुई जैसी सफेद व गुलाबी रंग की फफूंद के कवकजाल पाए जाते हैं। इन पौधों में बालियां स्वस्थ पौधों की अपेक्षा जल्दी निकलती हैं तथा इन बालियों में दाने नहीं बनते।

रोकथाम : बीजोपचार एवं नर्सरी उपचार करने से ही इस बीमारी की रोकथाम की जा सकती है। अत: बीज का चुनाव अवश्य करें। हमेशा प्रमाणित व उन्नत बीजों का ही प्रयोग करें।

बीज का चुनाव : एक एकड़ की रोपाई हेतु 8–10 किलोग्राम बीज पर्याप्त रहता है। शुरू में बोए जाने वाले बीजों को 1 किलोग्राम नमक को 10 लीटर पानी में मिलाएं। नीचे सतह पर बैठे स्वस्थ बीजों को अलग से निकाल कर 3–4 बार साफ पानी में धोएं ताकि बीज पर नमक के अंश न रहे तथा तैरने वाले बीज बाहर निकाल दें। इसके बाद बीजों का रासायनिक उपचार करें।

रासायनिक उपचार : स्वस्थ एवं भारी बीजों को कार्बेन्डाज़िम या एमिसान–6 की 10 ग्राम व स्ट्रैप्टोसाइक्लिन की 1 ग्राम मात्रा को 10 लीटर पानी में घोल लें तथा इस घोल में बीजों को 24 घंटे तक भिगोकर रखें तथा इस उपचार के बाद बीज को अंकुरित करें, तत्पश्चात् बीज को नर्सरी में बोएं।

नर्सरी का उपचार : बकानी रोग प्रबंधन के लिए बीजोपचार के बाद नर्सरी उपचार बहुत ही जरूरी है। इसके लिए धान की पनीरी को उखाड़ने से 7 दिन पहले 1 ग्राम कार्बेन्डाज़िम प्रति वर्गमीटर के हिसाब से रेत में मिलाकर बिखेरें।

(क) धान की पनीरी को हमेशा खड़े पानी में उखाड़ें।

(ख) रोग ग्रसित पौधों की रोपाई न करें।

(ग) रोग ग्रसित पौधों को निकाल कर मिट्टी में दबा दें या जला दें।

3. ब्लास्ट/बदरा : रोग ग्रसित पौधों के सभी भाग इससे प्रभावित होते हैं। इस रोग की अवस्था में पत्तियों पर आंख की आकृति के धब्बे बनते हैं। इस बीमारी की दूसरी अवस्था में तने पर गांठें चारों तरफ से काली हो जाती है तथा पौधा गांठ से टूट कर गिर जाता है। इस बीमारी की तृतीय अवस्था को गर्दन तोड़ कहते हैं, जिसकी वजह से रोग ग्रसित बालियां काली पड़ जाती है तथा टूट जाती है। बालियों में दानों का भराव पूरा नहीं हो पाता है। प्रभावित बालियों में दाने हल्के व खाली रह जाते हैं।

रोकथाम :

(क) स्वस्थ बीज का उपयोग करें तथा बीज को उपचारित करके ही बोएं।

(ख) बासमती धान की रोपाई 25 जून से 15 जुलाई तक करें।

(ग) पत्तियों पर आंख के आकार के लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाज़िम 200 ग्राम 50 डब्ल्यू.पी. या 120 ग्राम ट्राईसाईक्लाज़ोल (बीम या सिविक) 75 डब्ल्यू.पी. या 300 मिलीलीटर आइसोप्रोथियोलेन (फुजिवन 40 प्रतिशत ई.सी.) को 200 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

(घ) बालियां निकलने के दौरान खेत में सोखा न लगने दें।

4. जीवाणु पत्ता अंगमारी (बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट) : प्रभावित पौधों की पत्तियों के एक या दोनों किनारों से या कभी–कभी

शेष पृष्ठ 6 पर

खेती संदेश

KHETI SANDESH

मुख्य कार्यालय :
9-ए, अजीत नगर,
पटियाला-147001
(पंजाब)
मो. 98151-04575

कार्पोरेट कार्यालय :
के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड,
नजदीक शेरे पंजाब मार्केट,
पटियाला-147001
(पंजाब)
मो. 90410-14575

वर्ष : 01 अंक : 03
तिथि : 08-09-2025

सम्पादक
परमिंदर कौर

सम्पादकीय बोर्ड
डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझेले

Editor : PARMINDER KAUR
Printer, Publisher and Owner of Weekly 'KHETI SANDESH' Printed at Drishti Printers, Dasmesh Market, Near Sher-e-Punjab Market, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) and published from Kheti Sandesh, House No. 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.). E-mail : khetisandesh2025@gmail.com Mob. 90410-14575, RNI No.PBBIL/25/A0210

किसान भाई उन्नत पशुपालन करके अधिक से अधिक लाभ कमायें

मनोज कुमार, डा. के. वी. सिंह, डॉ. एन. एल. शर्मा एवं डॉ. भूपाल सिंह, कृषि विज्ञान केन्द्र, लखावटी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां के लगभग 75 प्रतिशत लोग खेती एवं पशुओं पर निर्भर है, ये दोनों व्यवसाय एक-दूसरे के पूरक हैं, पशुपालन हमारे देश में कृषि से भी पहले से किया जा रहा है। पशुपालक पहले पशुओं के रख-रखाव, चारा दाना व प्रजनन आदि समस्याओं पर ध्यान नहीं देता था लेकिन अब हमारे देश में पशु पालक आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करने को उत्सुक है जिससे कम से कम खर्च में अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। पशुपालन हमारे देश में मुख्यतः दुग्ध उत्पादन हेतु किया जाता है। अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए अच्छी नस्ल की गाय व भैंस का चुनाव करना आवश्यक है। खराब नस्ल के पशुओं को रखने से किसान की आर्थिक हानि अधिक होती है और ये पशु न तो अच्छा दुग्ध उत्पादन करते हैं और इनके बच्चे भी देरी से युवा होता है। हमारे देश की गाय की अधिकांश नस्ले कम दुग्ध उत्पादन करती हैं लेकिन देशी नस्ल की गाय व भैंस में रोगरोधी क्षमता अधिक होती है और विदेशी नस्लों पर हमारे देशों की जलवायु का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और ये पशु जल्दी रोग ग्रहण करते हैं। इसलिए इस समस्या के समाधान के लिए हमें जर्सी, हालस्टीन व फ्रीजियन, संकर नस्ल का चुनाव करना चाहिए।

1. नस्ल सुधार के उपाय :- हमारे देश में कम दूध देने वाले देशी पशुओं का पालन प्रत्येक घर में किया जाता है। अधिक दूध प्राप्त करने के लिए देशी गायों को विदेशी नस्ल जैसे जर्सी हालस्टीन व फ्रीजियन के साथ संकर नस्ल तैयार करने की योजना बनाई गई। आज देश के प्रत्येक भाग में पशुपालन विभाग द्वारा कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र स्थापित है एंव संकर नस्ल के पशुओं की पर्याप्त संख्या देश के कोने-कोने में विद्यमान है। कृत्रिम गर्भाधान से पशुओं की दुग्ध उत्पादन गुणवत्ता में क्रांतिकारी सुधार हुआ है। जिससे भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर काबिज है। भैंस पहले से ही भारत वर्ष में उन्नत नस्ल की पाली जाती है। इसके लिए शुद्ध नस्ल के पशुओं का चुनाव करना चाहिए। अब देश में नस्ल सुधार हेतु एक अन्य वैज्ञानिक विधि भ्रूण प्रत्यारोपण का प्रयोग हो रहा है। इस विधि में कुछ चुनी हुई अधिकतम उत्पादन वाली गायों का कृत्रिम विधि द्वारा अण्डा प्राप्त कर अच्छी नस्ल के सांडे के वीर्य से निशेचित करा कर भ्रूण उत्पादन करते हैं अभी पिछले दिनों वैज्ञानिकों ने एक ऐसा तरीका खोज निकाला है, जिसमें हमें पहले से ही पता लग सकता है कि हमारी गाय मादा बच्चा देगी या नर इस विधि से एक्स और वाई क्रोमोसोम की पहचान करके वाई क्रोमोसोम को नश्ट कर दिया जाता है। जिससे जो संतान पैदा होगी वह मादा ही होगी। जो पशु पालक दुग्ध व्यवसाय से जुड़ें हुए हैं

वे यही चाहते हैं कि उनकी अधिक दूध वाली गाय व भैंस मादा बच्चे को ही जन्म दें। इस विधि से उनकी इच्छा पूर्ति की जा सकती है।

2. गाभिन पशुओं की देखभाल :- पशु के गाभिन होने से पूर्व ही उसके आहार एवं पालन पोषण का उचित ध्यान रखना चाहिए। गाभिन कराने के एक माह पूर्व ही पशु को अतिरिक्त खनिज लवण या उचित आहार देना चाहिए। जब हमें यह मालूम हो जाये कि हमारा पशु गाभिन है तो उसके राशन में अतिरिक्त वृद्धि कर देनी चाहिए। दूध देने वाली मादा के 45-50 दिन पूर्व दूध निकालना बंद कर देना चाहिए ब्याने के 15-20 दिन पहले पशु को अलग बने प्रयास में रखना चाहिए। जिससे उसे दूसरे पशुओं से चोट आदि लगने का खतरा न रहे और पशु के बयाने के लक्षण देखकर उसे पूर्ण आराम देते हैं यदि बच्चा एक से दो घंटे में पैदा न हो तो तब इस देश में पशु चिकित्सक से परामर्श लें। बच्चा पैदा होने के छः से आठ घंटे बाद में जेर न गिरे तो बांस के आधा किलो पत्ते लेकर एक से डेढ़ किलो पानी में गर्म करके जब पानी आधा रह जाये तो उसमें 250 ग्राम नमक मिलाकर पशु को पिलाने से पशु जेर छोड़ देता है। यदि पशु जब भी जेर न छोड़े तो पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

3. बच्चों का उचित पालन पोषण :- पशु पालन में अच्छी नस्ल के चुनाव व पालन के बाद सबसे महत्वपूर्ण स्थान बच्चों के समुचित पालन पोषण का है एक कम आयु के बच्चों का उचित रख-रखाव होने पर ही श्रेष्ठ व्यस्क तैयार हो सकेंगे। बच्चों को पैदा होते ही सर्व प्रथम उसके नाक व मुख को स्वच्छ कपडे से साफ कर देना चाहिए। बच्चे के शरीर की सफाई करके उसे उसकी मां के पास छोड़ दिया जाता है। मां के चाटने से बच्चे के शरीर में रक्त संचार ठीक प्रकार से हो जाता है। बच्चा पैदा होते ही उसका नाभि (सूंड) 2 इंच नीचे से साफ ब्लेड से काट देना चाहिए। भैंस तथा बच्चा को उस पर डिटौल भी लगाना चाहिए पैदा होने के लगभग आधा घंटे बाद खीस पिलाना चाहिए। बच्चे को उसके शरीर भार का 1/10 भाग खीस पिलाया जाता है। खीस में रोगरोधक क्षमता अधिक होने के कारण बच्चे का अनेक रोगों से बचाव करता है। जब बच्चा दस दिन का हो जाये तो उसे एक बार पेट के कीड़ों की दवा अवश्य पिलानी चाहिए। क्योंकि कीड़ों के कारण ही भैंस के अधिकतर बच्चे एक माह की आयु में ही मर जाते हैं।

4. दूध देने वाले पशुओं का रख-रखाव :- ब्याने के बाद पशु को 250 ग्राम से 300 ग्राम देशी घी, 500-600 ग्राम गुड़, 50-60 ग्राम सौंठ, 70-80 ग्राम अजवाइन तथा 1.5-2 किलोग्राम पानी उन सबको अच्छी तरह उबालकर देशी घी बाद में मिलाया जाता है। जब यह हल्का गर्म रह जाये तो यह पशु को पिला देना चाहिए। इससे बच्चेदानी की सफाई होती है। यह नुक्सा पशु को सप्ताह में तीन बार देना चाहिए। इसके लिए पशु को यूटेरोटेन भी पिलाई जाती है। पहले सप्ताह में पशु को अच्छा चारा ही खिलाया जाता है दूसरे सप्ताह में पशु को थोड़ा राष्ठान भी देते हैं इसके बाद तीसरे सप्ताह से पशु को संतुलित राशन खिलाया जाता है और गाय की 3 किलोग्राम दूध पर 1 किलोग्राम दाना तथा भैंस को 2.5 किलोग्राम दूध पर 1 किलोग्राम दाना देते हैं तथा 50 ग्राम खनिज लवण प्रतिदिन देते हैं।

5. पशुओं के प्रमुख रोग :- गाय, भैंसों को होने वाली बीमारियों को मुख्यतः दो भागों में बांट सकते है। असंक्रामक रोग तथा संक्रामक रोग।

क. असंक्रामक रोग :- असंक्रामक रोग अधिकतर पशुओं के दुग्ध उत्पादन से जुड़े होते हैं जैसे - दुग्ध ज्वर व कीटोजगयता। ये रोग गाय भैंसों के ब्याने के तुरंत बाद ही पशुओं को प्रभावित करते हैं। इनसे बचाव हेतु पशु आहार में कैल्शियम, फास्फोरस व अन्य खनिज पदार्थ व अन्य पोषक तत्वों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। पशुओं को अच्छा व संतुलित आहार ही खिलाना चाहिए।

ख. संक्रामक रोग :- संक्रामक रोग पशुओं में तेजी से फैलते है जिससे पशु जल्दी व अधिक संख्या में ग्रसित हो जाते हैं तथा इन बीमारियों से पशुओं की मृत्यु अधिक होती है। ये निम्न प्रकार से हैं :-

विषाणु जनित रोग :- इसमें मुख्यतः खुरपका, मुंहपका, पोकनी आदि रोग आते है। पोकनी रोग में पशु पतला दस्त करता है। पशु को तेज बुखार होता है। पशु की आंखें लाल हो जाती हैं तथा नाक से पानी जैसे पदार्थ का स्राव होता है।

जीवाणु जनित रोग :- गाय भैंसों के जीवाणु जनित रोग मुख्यतः गलघोंटू, लंगडिया बुखार, प्लोहा ज्वर आदि रोग है। ये रोग पशुओं में धीरे-धीरे फैलते हैं और धीरे-धीरे एक से दूसरे पशु में बीमारी से दूषित चारे व दाने के द्वारा स्वस्थ पशुओं में फैल जाते हैं। पशुओं को रोगों से बचाने के लिए उपचार से अच्छा बचाव है यदि हम पहले से ही थोड़ा ध्यान रखें तो पशु बीमार होने से बच सकते हैं। इसके लिये हमें पशुओं की साफ-सफाई, पशुशाला की सफाई, स्वच्छ पानी तथा संतुलित आहार खिलाना चाहिए। पशुपालकों को अपने पशु झुण्ड में शुद्ध नस्ल के पशु ही रखने चाहिए। दस खराब नस्ल के पशु रखने से अच्छा है कि एक शुद्ध नस्ल का पशु रखें इससे उनके चारे व दाने की बचत होगी और पशु पालकों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

गन्ने की फसल में सितम्बर माह के कार्य

अन्त: कर्षण क्रियाएं : * गन्ने की सूखी पत्तियों को निकाल कर पलवार, पशुशाला में बिछावन या कम्पोस्ट के गड्ढे में प्रयोग कर लें। सूखे पत्तों को लाइनों के मध्य पलवार के रूप में बिछाने से बेधक कीटों का प्रकोप कम होगा तथा भूमि में नमी संरक्षण एवं कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ेगी।

* जल कल्लों या देर से निकले कल्लों को काट कर पशु आहार में प्रयोग करें। इससे कीट प्रबंधन में भी मदद मिलेगी।

* गन्ने की बढ़वार यदि अधिक हो तो सितम्बर माह में एक पंक्ति के दो थानों को दूसरी पंक्ति के एक थान से बांध कर त्रिकोणात्मक बंधाई करें।

* हरी खाद की पलटाई के बाद तैयार खेत में गन्ने की शीघ्र

पकने वाली प्रजातियों की सामान्य विधि से 90 सैंटीमीटर या ट्रैंच विधि से 125 से 150 सैंटीमीटर की दूरी पर बुवाई कर माह के अन्त में लाही, आलू, मटर आदि अन्त: फसलों की बुवाई कर दें।

* यदि बुवाई के लिए खेत खाली हो, तो पॉलीबैग में पौध तैयार कर लें, जिससे खेत खाली होने पर तैयार पौध का रोपण किया जा सके।

* संस्तुत प्रजातियों के स्वस्थ गन्ना बीज के लिए निकटतम चीनी मिल, शोध संस्थान या प्रगतिशील गन्ना बीज उत्पादक किसानों से सम्पर्क करें।

बुवाई से पूर्व गन्ने की गेड़ियों को 2-3 ग्राम थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. के घोल में 24 घंटे के लिए डुबो कर रखें। आरम्भ में कीटों से फसल सुरक्षा के लिए कूंड में गेड़ियों पर कीटनाशी रसायन का हजारे से छिड़काव करें।

फसल सुरक्षा : रोग ग्रसित पौधों को नियमित अंतराल पर खेत से जड़ सहित निकाल कर नष्ट करते रहें तथा रिक्त स्थान पर संवर्धित ट्राइकोडर्मा का भुरकाव कर दें।

पोक्का बोइंग रोग की शुरूआत नई पत्तियों के आधार पर पीले-सफेद धब्बों से होती है, जो आगे चल कर लाल-भूरे हो जाते है। पत्तियां सिकुड़न युक्त, घुमावदार, सामान्य से छोटे आकार की होती है, जो कट-फट कर विकृत हो जाती है। धीरे-धीरे संक्रमण नीचे की तरफ तने के वृद्धि बिन्दु को प्रभावित करता है तथा तने की छाल पर एक, दो या अधिक चाकू के कट जैसे आड़े निशान दिखते है। 20-30 डिग्री सैंटीग्रेड तापमान, 70-80 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता, बदली या फुहार वाली बारिश इस रोग के प्रसार के लिए सहायक परिस्थितियां है। कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का 15 दिन के अंतराल पर 2 या 3 छिड़काव कर रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिए जुलाई-अगस्त माह की भांति ही ट्राइकोग्रामा के 50,000 कीट प्रति हैक्टेयर की दर से प्रत्येक 10 से 15 दिन के अंतर से रोपित करते रहें।

बेधक कीटों के रासायनिक नियंत्रण के लिए खेत में पर्याप्त नमी की अवस्था में क्लोरेंट्रेनिलिप्रोले 18.5 एस.सी. 500-600 मिलीलीटर या फिप्रोनिल 2 लीटर मात्रा प्रति हैक्टेयर का छिड़काव या थिमेट 10जी 33 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक गन्ने की जड़ के

पास प्रात: 10 बजे से पूर्व भुरकाव करें।

पायरिल्ला कीट के नियंत्रण के लिए इपीरिकैनिया परजीवी के कोकून या अण्ड समूह को अधिकता वाले क्षेत्रों से लाकर अपने खेतों में गन्ने की पत्तियों के पीछे लगा दें। इपीरिकैनिया परजीवी के कोकून सफेद रंग तथा अण्डसमूह चटाईनुमा हल्के भूरे रंग के होते है, पत्तियों के पिछले भाग पर पाए जाते हैं।

गुरदासपुर बेधक कीट से ग्रसित गन्नों को निकाल कर नष्ट कर दें तथा ऊनी माहू का प्रकोप होने पर इसके परजीवी डाइफा कीट की 1000 गिडार/हैक्टेयर की दर से खेत में छोड़ें।

डॉ. आर.के. सिंह, अध्यक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र, बरेली

मिर्च की फसल को रोगों से बचाएं

डॉ. आर.एस. जारियाल, आदित्य व डॉ. कुमुद जारियाल, पादप रोग विज्ञान विभाग, डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, नेरी, हमीरपुर-177001 (हि.प्र.)

सब्जी वाली फसलों में मिर्च एक प्रमुख स्थान रखती है। इसका प्रयोग सब्ज़ी, मसाले और आचार के रूप में प्रति दिन किसी न किसी रूप में सम्मिलित रहता है। पिछले कुछ वर्षों से हाईब्रिड मिर्च किस्मों के प्रचलन से भले ही आमदनी में काफी मुनाफा हुआ हो तथा यह किस्में विषाणु रोगों से बचाव में भले ही सक्षम हो, परन्तु रोगों व कीटों से मिर्च फसल को काफी नुकसान होता है। इस लेख में मिर्च की फसल के मुख्य रोग व उनकी रोकथाम के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है।

1. आर्द्र गलन (डम्पिंग ऑफ) : इस रोग का प्रकोप मिर्च की नर्सरी में भूमि जनित फफूंदी के कारण होता है। यह रोग नर्सरी में नवजात पौधों को भूमि की सतह पर आक्रमण पहुंचाता है। रोग से पौधे अंकुरण से पहले और बाद में

भी मर जाते हैं। ग्रसित पौधे सूख कर ज़मीन की सतह पर गिर जाते हैं। पानी की अधिकता से रोग की उग्रता बढ़ जाती है।

रोकथाम : * बुवाई के लिए शुद्ध व स्वस्थ बीज काम में लेना चाहिए।

* बुवाई से पूर्व बीज का थिराम या कैप्टान या बाविस्टिन 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचार करके बोना चाहिए।

* नर्सरी में जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

* नर्सरी में पौध उगने पर क्यारियों को 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) कैप्टान या बाविस्टिन के घोल से सिंचाई करनी चाहिए।

2. फल का गलना व टहनी मार रोग : यह रोग कोलेटोट्राइकम नामक फफूंद से होता है। पौधे की टहनी ऊपर से सूखना शुरू करती है व नीचे तक सूखती चली जाती है। इस रोग के प्रकोप से फलों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते है तथा बाद में फल गलने लगता है। परिपक्व फलों पर भूरे धब्बे बड़े होकर चक्र का रूप धारण कर लेते है तथा उनका रंग काला हो जाता है।

रोकथाम : * बुवाई से पूर्व थिराम या कैप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलो के हिसाब से बीज का उपचार करें।

* रोग के लक्षण दिखाई देते ही 400 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराईड या जिनेब या इंडोफिल एम-45

को 200 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव दोहराएं।

3. जीवाणु धब्बा रोग : यह रोग एक प्रकार के जीवाणु जैन्थोमोनास से फैलता है। रोग के कारक बीज व बीमार पौधे के अवशेषों में विद्यमान रहते है। रोग के प्रकोप से छोटे-छोटे भूरे उभार युक्त धब्बे बन जाते है। इन धब्बों के चारों ओर पीला घेरा बन जाता है। नमी युक्त मौसम में रोग का फैलाव अधिक होता है व नई शाखाओं पर भी आक्रमण देखा जा सकता है।

रोकथाम :

* स्वस्थ फसल से बीज लेकर ही बुवाई करें।

* रोग के लक्षण दिखाई देते ही स्ट्रैप्टोसाइक्लिन 6-8 ग्राम दवा को 200 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ छिड़काव करना चाहिए।

* मिर्च की तुड़ाई के बाद रोग ग्रसित पौधों के अवशेषों को जला देना चाहिए।

4. मिर्च का सूखा रोग : मिर्च का यह सबसे खतरनाक रोग है, जिससे पैदावार में भारी नुकसान होता है। आमतौर पर यह रोग उन खेतों में आता है, जिन खेतों में हर वर्ष मिर्च की खेती की जाती है। क्योंकि इस भूमि जनित फफूंद के बीजाणु पहले से ही खेतों की मिट्टी में विद्यमान होते है, जोकि अगले वर्ष फसल में इस रोग का कारण बनते है। रोपाई से लेकर फसल की पूरी अवधि में किसी भी अवस्था में इस रोग के लक्षण पौधों पर देखे जा सकते है। शुरू में पौधों के नीचे वाली पत्तियां पीली पड़ कर नीचे गिर जाती है। यह बीमारी नीचे से आरम्भ होकर ऊपर की तरफ बढ़ती है। कुछ ही दिनों में सारा पौधा या पौधे का कुछ भाग बिल्कुल खत्म हो जाता है। इस रोग के लक्षण प्राय: शुरू में सारे खेत की बजाए चकतों में देखने को मिलते है, जो धीरे-धीरे बाद में सारे खेत को अपनी चपेट में ले लेती है।

रोकथाम : * बुवाई से पूर्व थिराम या कैप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलो के हिसाब से बीज का उपचार करें। जिन खेतों में यह रोग अक्सर आता है, वहां लम्बा फसल-चक्र अपनाएं।

* मई-जून के महीनों में रोग ग्रसित खेतों की गहरी जुताई करें।

* रोग के लक्षण दिखाई देते ही बाविस्टिन 0.2 प्रतिशत फफूंदनाशी का घोल बना कर रोग ग्रसित चकतों की सिंचाई करें।

5. विषाणु रोग : इस रोग के प्रकोप से पौधों की बढ़वार रुक जाती है। पत्तियां छोटी, मोटी व मुड़ी हुई हो जाती है। मौज़ेक में पत्तियों के ऊपर कहीं पर हल्के पीले व कहीं पर गहरे हरे धब्बे बन जाते है। पौधा छोटा व गुच्छे का रूप धारण कर लेता है। संक्रमित पौधों पर फूल व फल कम लगते है तथा आकार में भी छोटे रहते है। रोगों का प्रसार सफेद मक्खी, एफिड व थ्रिप्स द्वारा स्वस्थ पौधों पर होता है।

रोकथाम : * स्वस्थ और रोग रहित बीज लें।

* बीमारी फैलाने वाले कीटों का नर्सरी व खेतों में रोकथाम करें। 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ई.सी. को 200-250 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ छिड़काव करें तथा 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव दोहराएं।

* रोग ग्रसित पौधों को शुरू

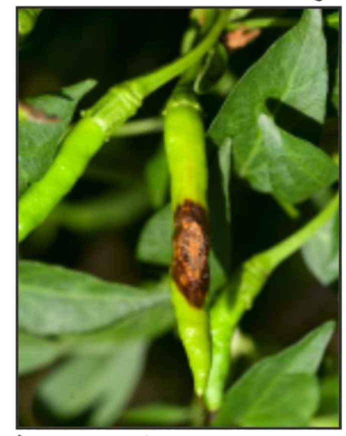

में ही ध्यानपूर्वक निकाल कर दबा दें।

सावधानियां :

* दवाओं के घोल में किसी चिपकने वाले पदार्थ टीपाल या सेंडोविट 60-70 मिलीलीटर प्रति 100 लीटर पानी के हिसाब से अवश्य मिला लें।

* छिड़काव हमेशा बारीक फव्वारे से करें।

* छिड़काव करने से पहले फल अवश्य तोड़ लें।

मटर की बुवाई का सही समय

शीतकालीन सब्ज़ियों में मटर की सबसे ज्यादा मांग होती है। आजकल मटर की डिब्बा बंदी भी काफी लोकप्रिय है। इसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फास्फोरस, रेशा, पोटाशियम एवं विटामिन्स पाया जाता है। देश भर मे इसकी खेती व्यवसायिक रूप से की जा सकती है। हरी मटर की मांग आजकल सालों साल रहती है, लेकिन सितंबर में बोई गई अगेती मटर में जल्द फलियां आती हैं, जिससे मुनाफा भी ज्यादा होता है।

मटर की अगेती प्रजातियों की सब्ज़ियों के रूप में हर साल बड़ी मांग है, जिसको देखते हुए रबी सीज़न की मुख्य दलहनी फसल मटर की अगेती

प्रजातियों को सितंबर में बुवाई के लिए विकसित किया गया है। भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक बिजेन्द्र सिंह ने बताया कि, "दलहनी सब्ज़ियों में मटर लोगों की पहली पसंद है, इससे जहां भोजन में प्रोटीन की ज़रुरत पूरी होती है, वहीं इसकी खेती से भूमि की उर्वरा शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होती है। किसान कम अवधि में तैयार होने वाली मटर की प्रजातियों की बुवाई सितंबर से अंतिम सप्ताह से लेकर अक्टूबर के मध्य तक कर सकते हैं।"

उन्होंने बताया कि किसान मटर की अगेती किस्मों की खेती करके जहां सब्ज़ियों में मटर की बढ़ी हुई मांग को पूरा कर सकते हैं, वहीं इससे अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान ने मटर की अगेती प्रजाति की कई किस्मों को विकसित किया है, जिसमें आजाद मटर-3, काशी नंदिनी, काशी मुक्ति, काशी उदय और काशी अगेती प्रमुख हैं। मटर की इन प्रजातियों की सबसे खास बात यह है कि यह 50 से लेकर 60 दिन में तैयार हो जाती है, जिससे खेत जल्दी खाली हो जाता और किसान दूसरी फसलों की बुवाई भी कर सकते हैं।

खेत की तैयारी : सब्ज़ी मटर के लिए बलुई दोमट सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह भी ध्यान रहे कि खेत में जल निकास का अच्छा प्रबन्ध हो और भूमि का पी.एच. मान 6-7 के बीच हो। पहले मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में देसी हल से खेत की जुताई कर पाटा चलाएं।

बुवाई का समय : अगेती हरी फलियों के लिए मटर की बुवाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से मध्य अक्टूबर तक करनी चाहिए। अधिक तापमान में बुवाई करने से उकठा रोग लग जाता है।

बुवाई की विधि : सब्ज़ी मटर के लिए प्रति हैक्टेयर 100 किलोग्राम बीज की ज़रुरत पड़ती है। बुवाई से 24 घंटे पहले विषेशकर सिकुड़नदार बीज को पानी में भिगो लें, फिर छाया में सुखाकर थीरम कैप्टान आदि दवा से 2.5 ग्राम

प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित कर लें। या 200 ग्राम साडावीर फंगस फाइटर उसी पानी में मिला दें। राइजोबियम से बीज को उपचारित करने के लिए 50 ग्राम गुड़ 2 लीटर पानी में घोल कर 10 मिनट उबालें, फिर ठंडा होने पर कल्चर मिला कर लेप तैयार कर लें।

उर्वरक का उपयोग : उर्वरक का उपयोग हमेशा मिट्टी की जांच के बाद जरूरत के मुताबिक करना चाहिए। जांच संभव न होने पर प्रति हैक्टेयर 20 किलोग्राम नत्रजन, 60-70 किलोग्राम फास्फोरस, 30-40 किलोग्राम पोटाश 3 किलो महाबली, 3 किलो साडावीर एवं 20 किलोग्राम सल्फर का उपयोग करना चाहिए। गोबर की सड़ी खाद 20 से 25 टन प्रति हैक्टेयर प्रयोग की जाए तो उत्पादन और बढ़ जाएगा।

निराई-गुड़ाई : फसल बोने के 40 दिन तक खरपतवारों पर नियंत्रण रखना अति आवश्यक है। पैंडीमैथालिन 4 लीटर प्रति हैक्टेयर की 600 लीटर पानी में घोल कर बुवाई के 72 घंटे के अंदर छिड़काव कर देने से चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार समाप्त हो जाते हैं।

सिंचाई : बुवाई के पहले खेत को पलेवा करके भली-भांति तैयार कर लेना चाहिए, जिससे मिट्टी में पर्याप्त नमी रहे। खेत में उचित नमी ना होने पर उत्पादन 30 से 40 प्रतिशत कम हो जाता है।

शेष पृष्ठ 3 की

धान की बीमारियां एवं उनका प्रबंधन

मध्य सिरे के साथ ऊपर से नीचे की ओर पीले रंग की लहरधार धारियां बनती हैं। अन्त में पत्ते सूख जाते हैं। धान की पूरी फसल झुलसी हुई नज़र आती है। यदि मौसम में नमी हो तो रोग ग्रसित पत्तियों पर पीले रंग का स्त्राव निकलता है। यह स्त्राव सूखने के बाद सख्त और पीला पड़ जाता है।

रोकथाम : (क) बीजोपचार

पहले बतलाए तरीके अनुसार करें।

(ख) रोगरोधी एवं सहनशील किस्मों (आई.आर.-64 व एच.के.आर.-120) की रोपाई करें।

(ग) बीमारी वाले खेतों का पानी स्वस्थ खेतों में न जाने दें तथा इन खेतों का पानी निकाल दें।

(घ) संतुलित मात्रा में ही खादों का प्रयोग करें तथा रोपाई के 42 दिन बाद खाद मत डालें।

(ड़) रोग ग्रसित पौधों को निकाल कर नष्ट करें।

5. पर्णच्छद अंगमारी (शीथ ब्लाइट) : इस बीमारी के लक्षण मुख्यत: तने पर लिपटी बाहर वाली पर्णच्छद पर अनियमित आकार

के मटमैले सफेद एवं हरे धब्बों (सांप की कांचली जैसे) के रूप में फुटाव से गाभे की अवस्था के बीच दिखाई देते हैं। ये धब्बे बाद में पुआल जैसे हो जाते हैं। यह बीमारी खेत में मेढ़ों पर या उसके आस-पास अधिक दिखाई देती है, जहां पर खरपतवार होता है।

रोकथाम : (क) मेढ़ों व खेत से घास निकालें।

(ख) खेतों में नत्रजन खाद की मात्रा को अधिक न डालें।

(ग) बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर शीथमार 3 प्रतिशत एल. वैलिडामाइसिन 450 मिलीलीटर या लस्टर 37.5 एस.ई. 400 मिलीलीटर या थाईफ्लुजामाइड 24 प्रतिशत एस.सी. (इग्लेयर) की 150 मिलीलीटर मात्रा का 200 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें तथा दूसरा छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

6. भूरे धब्बों का रंग : इस बीमारी के प्रमुख लक्षण पत्तियों व दानों पर धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। पत्तियों पर गोलाकार या अंडाकार धब्बे हो जाते हैं। इन धब्बों के बाहर पीले रंग का छोटा सा चक्र होता है। कुछ धब्बे आपस में मिल कर बड़ा रूप ले लेते हैं। दानों पर भी काले-भूरे व गोलाकार धब्बे बन जाते हैं।

रोकथाम : (क) बीज

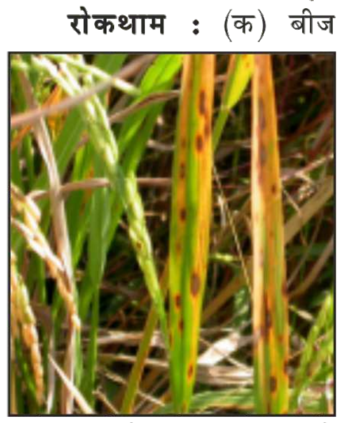

उपचार पहले बताए गए तरीके अनुसार करें।

(ख) बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर 600 ग्राम मैन्कोज़ेब 200 लीटर पानी में घोल कर प्रति एकड़ छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव आवश्यकता अनुसार 10-15 दिन बाद दोहराएं।

7. आभासी कंडुआ (हल्दी गांठ रोग) : इस बीमारी के लक्षण बालियां निकलने के बाद ही दिखाई देते हैं। रोग ग्रसत दाने धुधरूओं जैसे हो जाते हैं। दानों की जगह पीले तथा बाद में हरे या काले रंग के धुंधरू दिखाई देते हैं। यह रोग हल्दी गांठ के नाम से भी

जाना जाता है।

रोकथाम :

(क) स्वस्थ एवं बीजाणु रहित बीज का प्रयोग करें।

(ख) खेतों में खाद संतुलित मात्रा में ही डालें।

(ग) 50 प्रतिशत बालियां निकलने पर 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराईड (ब्लाईटॉक्स 50 डब्ल्यू.पी.) को 200 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

8. बदरंगे दाने : इस बीमारी के लक्षण दानों पर छोटे अथवा बड़े आकार के पूरे काले रंग के धब्बे बन जाते हैं। बालियों के अन्दर कुछ दाने अधमरे व खाली रह जाते हैं।

(क) इस बीमारी की रोकथाम के लिए 50 प्रतिशत बालियां निकलते ही 200 मिलीलीटर प्रोपिकोनाज़ोल (रिजल्ट) 25 ई.सी. का 200 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

9. पर्णच्छद गलन : इस बीमारी की वजह से बालियों के साथ सबसे ऊपर वाली पत्ती के निचले हिस्से पर गहरे भूरे चाकलेटी तथा काले रंग के 3.5 से 10 सैंटीमीटर लम्बे तथा 2-5 सैंटीमीटर चौड़े धब्बे पड़ जाते हैं। अनुकूल वातावरण मिलते ही यह धब्बे आकार में बढ़ जाते है तथा बालियों के साथ वाली पत्ती के पर्णच्छद

को चौतरफा घेर लेते हैं। बालियां अंदर ही फंसी रह जाती हैं तथा बालियों में दाने अधमरे व खाली रह जाते हैं।

रोकथाम :

(क) बीजोपचार करें।

(ख) 15 जून से पहले रोपाई न करें।

(ग) जब फसल गाभे की अवस्था में हो तो 200 मिलीलीटर प्रोपिकोनाज़ोल (रिजल्ट) 25 ई.सी. को 200 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

मूंग की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग, कीट एवं उनका प्रबंधन

लक्ष्मण प्रसाद बलाई, नवाब सिंह, माधोसिंह, निरंजन कुमार बरोड़ व सागर मल खारडिया,
कृषि विज्ञान केन्द्र, धोलपुर, कृषि अनुसंधान केन्द्र, नौगांव (अलवर),
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरू

राजस्थान में मूंग की खेती मुख्यत: अधिक क्षेत्र में असिंचित परिस्थितियों एवं बारानी क्षेत्र में की जाती है। जिन खेतों में मूंग की

फसल असिंचित परिस्थिति में बुवाई की जाती है, उन खेतों में नमी का संरक्षण होता है, मूंग की फसल कम अवधि की होने के कारण अगली फसल की बुवाई में देरी नहीं होती है। मूंग में खरीफ के मौसम में रोग का अधिक प्रकोप होने के कारण, इसकी औसत उपज बहुत कम प्राप्त होती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए फसल को बीमारियों एवं कीटों से देखभाव व उनका प्रबंधन करना अति आवश्यक है।

भारत में मूंग की खेती ग्रीष्म एवं खरीफ दोनों मौसम में की जाती है। मूंग दलहनी फसलों में सबसे प्रमुख दाल है, जो इस देश की शाकाहारी जनता का प्रमुख प्रोटीन का स्त्रोत है। हमारे देश में यह करीब 40 लाख हैक्टेयर में उगाई जाती है। कम समय में पकने वाली व अधिक लाभ देने की वजह से आजकल शुष्क व अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में भी इस फसल की खेती काफी लोकप्रिय हो रही है। यह फसल 65-70 दिन में पक कर तैयार हो जाती है व 200-400 मिलीमीटर वाले वर्षा क्षेत्र में अच्छी उपज दे देती है। राजस्थान में मूंग की खेती मुख्यत: अधिक क्षेत्र में असिंचित परिस्थितियों एवं बारानी क्षेत्र में की जाती है। जिन खेतों में मूंग की फसल असिंचित परिस्थिति में बुवाई की जाती है, उन खेतों में नमी का संरक्षण होता है, मूंग की फसल कम अवधि की होने के कारण अगली फसल की बुवाई में देरी नहीं होती है। मूंग में खरीफ के मौसम में रोग का अधिक प्रकोप होने के कारण, इसकी औसत उपज बहुत कम प्राप्त होती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए फसल को बीमारियों एवं कीटों से देखभाव व उनका प्रबंधन करना अति आवश्यक है।

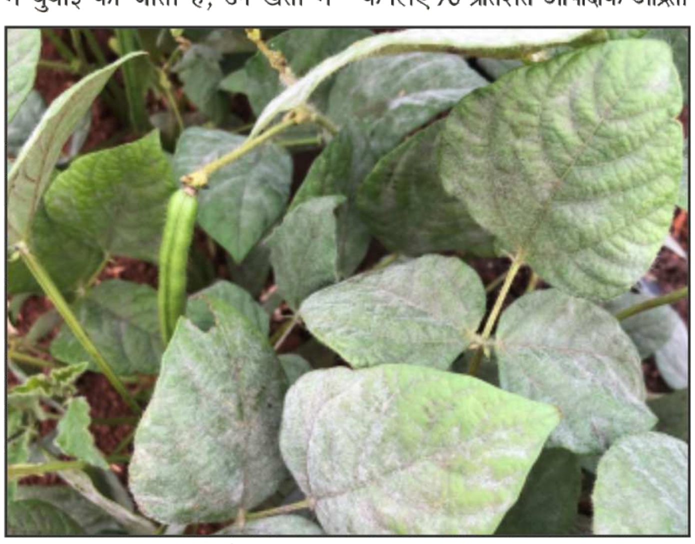

1. अल्टरनेरिया पर्ण धब्बा रोग : मूंग में यह रोग *सरकोस्पाकरा कोनेसस* व *सरकोस्पोरा क्रुएन्टा* से होता है। यह रोग आर्द्र मौसम व छुट-पूट वर्षा के समय पत्तियों पर फैलता है। पत्ती की सतह पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते है। प्रांरभिक अवस्था में ये धब्बे गोल एवं छोटे भूरे रंग के होते है। बाद में ये छल्ले के रूप में गहरे भूरे रंग का आकार ले लेते हैं। संक्रमित भाग पत्ती से अलग होकर गिर जाता है। रोगजनक के बीजाणु (कोनिडिया) रोग जनित पौधों के अवशेष एवं ठुण्ठ पर तथा आश्रित खरपतवारों पर जीवित रहते हैं। इनकी बढ़वार के लिए 70 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता एवं 12 से 25 डिग्री तापमान उपयुक्त होता है।

रोग का प्रबंधन : * खेतों को साफ-सुथरा रखें।

* टेबुकोनाजोल या मेटालेक्सल 35 से 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजोपचार करें।

* फसलों में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का उपयोग 3 ग्राम प्रति लीटर घोल बना कर से छिड़काव करें।

2. एन्थ्रैक्नोज (श्याम वर्ण रोग) : यह रोग बीज पत्र तथा तना पत्ती एवं फलियों पर होता है। संक्रमित भाग पर अनियमित आकार के भूरे धब्बे लालिमा लिए हुए दिखाई देते हैं, जो कुछ समय बाद

गहरे रंग के हो जाते हैं।

रोग का प्रबंधन :

* संक्रमित पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।

* बीजों को बोने से पूर्व टेबुकोनाज़ोल या मेटालेक्सल 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित कर बोएं।

* फसल-चक्र अपनाएं।

* स्वस्थ बीज का उपयोग करें।

3. जीवाणु पत्ती धब्बा रोग : यह रोग एक *शाकाणु जेन्थोमोनास* से उत्पन्न होता है। इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम अंकुरित पौधों के बीज पत्रों एवं पत्तियों पर जल

सिक्त धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। बाद में ये भूरे रंग के होकर केंकर का रूप धारण कर लेते हैं। पत्ती की सतह पर बहुत सारे भूरे रंग के सूखे हुए धब्बे दिखाई पड़ते हैं। प्रकोप बढ़ने पर ये धब्बे पूरी पत्ती पर फैल जाते है, जिससे सभी पत्तियां पीली दिखाई देती है एवं पत्तियां गिर जाती है। पत्ती की निचली सतह पर देखने पर ये धब्बे लाल रंग लिए होते हैं। इसका प्रभाव तने एवं फलियों पर भी देखा जा सकता है।

रोग का प्रबंधन : * बीज को 500 पी.पी.एम. स्ट्रैप्टोसाइक्लिन घोल में 30 मिनट के लिए डुबो कर रखें।

* बोने से पहले बीजों को दो छिड़काव स्ट्रैप्टोसाइक्लिन एवं 3 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड प्रति लीटर के हिसाब से दोनों को आपस में मिला कर 12 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।

4. सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग : इस रोग के लक्षण छोटे-छोटे धब्बों के रूप में पत्ती की सतह पर देखे जा सकते हैं। ये धब्बे हल्के भूरे रंग के तथा इनका किनारा लाल-भूरा रंग लिए हुए होता है। ये धब्बे फलियों एवं शाखाओं पर भी देखे जा सकते है। प्रकोप अधिक होने पर ये धब्बे पूरे पौधों में फैल जाते है एवं पत्ती सिकुड़ कर छोटी हो जाती है।

रोग का प्रबंधन :

* रोग सहनशील किस्में लगानी चाहिए।

* मूंग के साथ अंतवर्ती फसलें जैसे अधिक ऊंचाई वाले आनाज एवं मिलेटस लगाएं।

* फसलों की कम संख्या रखते हुए चौड़े पट्टी वाले पौध रोपण का उपयोग करें।

* मल्च का इस्तेमाल करें।

* कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का उपयोग 3.0 ग्राम प्रति लीटर घोल बना कर बुवाई के 30 दिन बाद छिड़काव करें।

5. लीफकर्ल (पत्ती मोड़न) : नये पत्ती पर हरीमाहिनता के रूप में पत्ती की मध्य शिराओं पर दिखाई देते हैं। इस रोग में पत्तियां मध्य शिराओं से ऊपर की ओर मुड़ जाती है। नीचे की पत्तियां अंदर की ओर मुड़ जाती है। पत्ती की निचली सतह की शिराएं लालिमा लिए हुए भूरे रंग की हो जाती है। बुवाई के कुछ सप्ताह बाद ही इसके लक्षण पौधों में दिखने लगते है, जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है और पौधों की मृत्यु हो जाती है।

रोग का प्रबंधन : यह विषाणु जनित रोग है, जिसका संचरण कार्य थ्रिप्स द्वारा होता है। थ्रिप्स के प्रबंधन हेतु इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफ.एस. की 1 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। फसलों की समय पर बुवाई करें।

6. पीला चित्रवर्ण या पीला मौजेक रोग : यह रोग सभी मूंग की खेती वाले क्षेत्रों में लगता है। इसकी शुरूआत नई पत्तियों में बिखरे हुए पीली-पीली धारियों के रूप में हरी पत्तियों पर होती है। अगली तीन पत्तियों में हरी व पीली धारियां एक मौजेक रूप ले लेती हैं। कई बार हरे रंग में उठाव आने की वजह से पत्तियां मुड़ी हुई सी दिखाई देती हैं। उग्र अवस्था में पूरी की पूरी पत्तियां ही पीली हो जाती हैं। रोग ग्रसित पौधे अधिकतर देर से पकते है व उन पर फूल व फलियां भी कम आती हैं। यह रोग एक विषाणु से उत्पन्न होता है व एक मक्खी *बेमीसियां टेबेसाई* से फैलता है। कुछ खरपतवारों पर भी यह रोग लगता है, जिससे यह मूंग की फसल में और ज्यादा फैलता है।

अरहर की फसल इस रोग के विषाणु व फैलाने वाले कीड़े को जिन्दा रखने में काफी सहायक है। इस रोग से 10 प्रतिशत तक नुकसान देखा गया है। जायद फसल में इसका प्रकोप खरीफ फसल से अधिक होता है, क्योंकि गर्मी का मौसम इस रोग को फैलाने में सहायक रहता है।

रोग का प्रबंधन : * रोग रोधक किस्मों जैसे पीडीएम-54 आदि को खेत में लगाना चाहिए।

* खरपतवारों को उखाड़ कर नष्ट कर दें तथा रोग ग्रसित पौधे को भी उखाड़ कर नष्ट कर दें।

* बीजोपचार इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू.एस. 5 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से करें।

* रोग फैलाने वाली मक्खी को मारने के लिए कीटनाशकों का उपयोग प्रभावी रहता है। इनमें इमिडाक्लोप्रिड की 1 मिलीलीटर मात्रा को 3 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। इसके अलावा मैटासिस्टॉक्स (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव भी काफी प्रभावशाली रहता है।

* देर से की गई बुवाई में रोग अधिक फैलता है।

* मिश्रित खेती में बाजरा, ज्वार, तिल आदि लगाने से भी यह रोग कम किया जा सकता है।

7. चूर्णिल आसिता या भभूतिया रोग : दलहनी फसलों के प्रमुख रोगों में से चूर्णिल आसिता है। यह रोग *इरीसाईफी पोलीगोनाई* नामक फफूंद से होता है। जो भूमि के ऊपर मूंग के सभी भागों पर लग सकता है। पत्ती की ऊपरी सतह पर सफेद पाऊडर के समान संरचना दिखाई देती है, जोकि बाद में मटमैले रंग में बदल जाती है। ये सफेद पाऊडर तेज़ी से बढ़ते हैं और पत्ती की निचली सतह पर आवरण के रूप में फैल जाते है। बीमारी का प्रकोप बढ़ने पर ये सफेद पाऊडर जैसे संरचना पत्ती की दोनों तरफ की सतह पर दिखने लगते हैं। पत्तियां असमय झड़ने लगती है। मौसम अनुकूल होने पर इस तरह के लक्षण पत्ती के अतिरिक्त शाखाओं एवं फलों में दिखने लगते हैं। उग्र अवस्था में

शेष पृष्ठ 10 पर

कम उर्वरक मृदा में

ग्वार पाठा उगाइए

ग्वार पाठा को घृतकधरी के नाम से भी जाना जाता है। इससे अंग्रेजी में एलोवीरा कहते हैं। यह लिलिएसी कुल का औषधीय पौधा है। इसका उत्पत्ति स्थान उत्तरी अफ्रीका माना जाता है। इसमें अनेक औषधीय गुण पाये जाते है जो विभिन्न

प्रकार के रोगों के उपचार में आयुर्वेदिक एवं युनानी चिकित्सा पद्धति में उपयोग किया जाता है। इसके औषधीय गुण के कारण इसे बगीचों एवं घरों के समीप भी उगाया जाता है। पहले इसे खेतों के मेंडों पर, नदी किनारे अपने आप उग आता था, परंतु इस की बढ़ती मांग के कारण कृषक व्यवसायिक रूप से खेती कर रहे हैं और समुचित लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इसकी विशेषता है कि इसे उर्वर मृदा, कम सिंचाई व कम देखभाल में सुगमता से उगाया जा सकता है।

वानस्पतिक विवरण : ग्वार पाठा के पौधे की सामान्य ऊंचाई 60-90 से.मी. होती है। इसके पत्तों की लम्बाई 30-45 से.मी. और चौड़ाई 2.5-7.5 से.मी. और मोटाई 1.25 सेमी. होती है। प्रारम्भ में इसके पत्ते सफेद रंग के होते है। पत्ते आगे से नुकीले एवं किनारों पर कंटीले होते है। पौधों के बीचों बीच एकदंड पर लाल फुल आते है। इस पर शीतकाल में आते जिन पर फल आते है।

इसकी खेती से अधिक उत्पादन प्रप्त करने हेतु कृषक बन्धुओं को निम्न बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

जलवायु : ग्वार पाठा को उष्ण, आद्र एवं समशीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में सरलतापूर्वक उगाया जा सकता है। कम वर्षा और अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में इस की खेती की जा सकती है।

भूमि : ग्वार पाठा को किसी भी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। इसे चट्टानी, पथरीली, रेतीली भूमि में भी उगाया जा सकता है, किन्तु जलमग्न भूमि में इसका उत्पादन नहीं किया जा सकता है। उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट भूमि जिसकी पी.एच. मान 6.5-8.0 के मध्य हो सर्वोत्तम मानी गयी है।

खेत की तैयारी : जिस खेत में ग्वार पाठा की खेती करनी हो उसे सर्वप्रथम खरपतवारों व घासों आदि से मुक्त करना होगा, जिसके लिए ग्रीष्म ऋतु में 2-3 बार जुताई करना नितान्त आवश्यक है। खेत की गहरी जुताई की आवश्यकता नही है क्योंकि ग्वार पाठा की जड़े उथली होती है।

जिस समय ग्वार पाठा की रोपाई करनी हो, उस समय खेत की जुताई करके पाठा लगाकर मिट्‌टी को भुरभुरा कर खेत में 45 से.मी.-45 से.मी. की दूरी पर मेड़े बना दी जाती है। इन मेंडों की ऊंचाई लगभग 30 से.मी. रखनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक : सामान्य तथा ग्वार पाठा की फसल को विशेष प्रकार की खाद एवं उर्वरकों की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु अच्छी वृद्धि एवं उत्पादन के लिए 10-15 टन गोबर की खाद, अंतिम जुताई के समय प्रति हैक्टेयर की दर से डालनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 50 किलो नाइट्रोजन, 25 किलो फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई से पूवर्च और शेष नाइट्रोजन की मात्रा 2 माह बाद 2 भागों में बांट कर देनी चाहिए अथवा नाइट्रोजन की शेष मात्रा को 2 बार छिड़काव भी कर सकते है।

प्रवर्धन : ग्वार पाठा का प्रवर्धन छोटे पौधे अथवा साइड सर्कस के द्वारा किया जाता है। यूं तो ग्वार पाठा के पौधों पर बीज भी आते है उनसे भी प्रवर्धन किया जा सकता है, परन्तु यह विधि व्यवसायिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।

वर्ष ऋतु में उपयुक्त नमी की अवस्था में इसके पौधों को 50 सैंटीमीटर × 50 सैंटीमीटर की दूरी पर मेंड़ या समतल खेत में रोपाई की जाती है। कम उर्वरक भूमि में पौधों को 40 सैंटीमीटर × 40 सैंटीमीटर पर रोपाई करनी चाहिए।, जिससे पौधों की संख्या 40,000-50,000 प्रति हैक्टेयर पर्याप्त होती है। वैसे इसकी रोपाई का उपयुक्त समय जून-जुलाई है परन्तु सिंचाई की सुनिश्चित व्यवस्था होने पर इसकी रोपाई फरवरी माह

में भी की जा सकती है।

उन्नत किस्में : एलोइन एवं जैल उत्पादन की दृष्टि से नेशनल ब्यूरों ऑफ प्लांट जेनेटिक सोर्सेज द्वारा ग्वार पाठे की उन्नत किस्मों के नाम नीचे दिये गये है : आई. सी. 111271, आई.सी. 111269, आई.सी. 111280, आई.सी. 111273, आई.सी. 111267, आई. सी. 111279

एलोइन की मात्रा की दृष्टि एवं आई.सी. 111267, आई.सी. 111280, आई.सी. 111272, आई. सी. 111277 को जैल की दृष्टि से उत्तम माना जाता है।

सीमेप, लखनऊ द्वारा भी ग्वार पाठे की उन्नत किस्म अंकचा (ए.एल 1) विकसित की गई है।

सिंचाई एवं जल निकास : ग्वार पाठा एक ऐसा पौधा है जो शुष्क मृदाओं में भी उगाया जा सकता है और सिंचित क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है। ग्वार पाठा के पौधों की रोपाई के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए ताकि पौधे भली-भांति स्थापित हो जाए। ग्रीष्म ऋतु में जब गर्मी पूरे जोरों पर हो उस समय इसे एक सिंचाई की आवश्यकता होती है।

यदि वर्षा ऋतु में खेत में पानी एकत्रित हो जाए तो उसे तुरन्त निकालने की व्यवस्था की जानी चाहिए अन्यथा फसल पीली पड़ कर मर जाने की आशंका रहती है।

यदि सिंचाई की सुनिश्चित व्यवसाय न हो तो ग्वार पाठा के पौधों में जैल की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है। इस प्रकार यदि महीने में एक बार सिंचाई की व्यवस्था हो सके तो पौधों में तैयार होने वाली जैल की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि और उत्पादन भी बढ़ेगा।

सिंचाई जल की बचत करके एवं अधिक उपयोग करने के लिए स्प्रिंकलर या ड्रिप विधि का उपयोग कर सकते है।

फसल की कटाई : इस फसल की उत्पादन क्षमता बहुत अधिक होती है। पौधों की रोपाई के एक वर्ष बाद पत्तियां काटने योग्य हो जाती है। इसके बाद दो माह के अन्तराल पर परिपक्व पत्तियों को काटते रहना चाहिए। पत्तियों को काटने हेतु तेज धार वाले हंसिए का उपयोग करना चाहिए। काटने के उपरान्त पौधे पर पुन: पत्ते उग जाते है। इस प्रकार यह फसल 4-5 वर्ष तक अच्छी उपज देती रहती है। पत्तों को काटने के उपरान्त पौधों पर फफूंदी का प्रकोप हो सकता है अत: फसल पर इन्डोथेन एम-45 का छिड़काव करना चाहिए।

उपज : यदि ग्वार पाठा की उपरोक्त वर्णित विधि से खेती की जाए तो प्रथम वर्ष में 35-40 टन / हैक्टेयर उत्पादन मिल जाता है। द्वितीय वर्ष में 10-15 प्रतिशित उत्पादन बढ़ जाता है।

बारानी क्षेत्रों में लगभग 20 टन / हैक्टेयर उत्पादन मिल जाता है।

पौध संरक्षण के उपाय

खरपतवार नियंत्रण

क्योंकि ग्वार पाठा धीमी गति से वृद्धि करने वाला पौधा है अत: रोपाई के प्रथम वर्ष में खेत में अधिक खरपतवार उगाने की सम्भावना रहती है। इन खरपतवारों की सफाई की दृष्टि से खेत की नियमित अंतरालों पर निराई-गुड़ाई करना नितान्त आवश्यक है। निराई-गुड़ाई के समय पौधों पर मिट्‌टी भी चढ़ा देनी चाहिए।

कीट नियंत्रण

आमतौर पर ग्वार पाठा की फसल पर कोई कीट नहीं लगता है, परन्तु कभी-कभी तनों व जड़ों को ग्रब नामक सूंडी क्षति पहुंचाती है। इसकी रोकथाम के लिए 60-70 किलो नीम की खली/हैक्टेयर खेत की तैयारी के समय डालनी चाहिए।

रोग नियंत्रण

पत्ती धब्बा रोग : ग्वार पाठा में कभी-कभी आल्टर नेटिया, आल्टानेटा एवं फ्यूजरियम सोलानी नामक कवकों के कारण यह रोग हो जाता है। इस रोग के कारण पौधों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, साथ ही तैयार होने जैल की गंध भी प्रभावित होती है। इसकी रोकथाम हेतु मैंकोजेब या क्लोरोथेनोल की 3 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

डॉ. देवी दयाल नारंग,
कृषि विशेषज्ञ (सेवा–निवृत),
पंजाब कृषि विश्वविद्यालय,
लुधियाना (मो.94647–20231)

कीटनाशकों का सुरक्षित व सही प्रयोग

आधुनिक कृषि में कीटनाशकों के बिना कीट नियंत्रण करना कठिन है। कीटों एवं व्याधियों से फसलों, सब्जियों, फलों व गोदामों के लिए रासायनिक दवाओं का प्रयोग काफी बढ़ गया है। आमतौर पर यह सभी रसायन ज़हरीले होते हैं तथा खेतों में इनका इस्तेमाल करते समय किसान या इनका छिड़काव करने वाले सम्पर्क में अवश्य आते है और उनके स्वास्थ्य तथा सुरक्षा पर हमेशा खतरा बना रहता है। इसलिए यह अति आवश्यक है कि कीटनाशियों का सही एवं उचित तरीके से काम लाया जाए ताकि उपयोगकर्ता का स्वास्थ्य एवं सुरक्षा दोनों का पूर्ण तरीके से पालन हो सके।

वास्तव में बहुत सारे किसान व छिड़काव कर्ता हैं, जो इस मामले में पूरी सावधानी नहीं अपनाते। इसके मुख्य दो कारण है कि या तो इन लोगों को आवश्यक सुरक्षा संबंधी सावधानियों का ज्ञान नहीं होता अथवा वे इसके महत्व को ही नहीं समझते। किसानों तथा अन्य लोगों, जो कीटनाशकों के प्रयोग व संचालन से सीधे जुड़े होते है तथा अन्य लोगों, जो कीटनाशकों व अन्य उनके अवशेषों का दुष्प्रभाव पड़ने के आसार बाकी लोगों की तुलना में अधिक होते है। यदि इन कीटनाशकों का प्रयोग सावधानीपूर्वक ना किया जाए, तो परिणाम घातक भी हो सकते है। अत: कीटनाशकों का उचित व सावधानीपूर्वक प्रयोग आदि अति अनिवार्य है।

डिब्बे पर दिए गए निर्देशों को उचित व सावधानीपूर्वक पढ़ें एवं उनका पालन करें। प्रत्येक कीटनाशक के डिब्बे पर एक–दूसरे के विपरीत जुड़े हुए त्रिकोणों द्वारा उसकी विषाक्तता को दर्शाया जाता है। ऊपर वाले त्रिकोण में अंग्रेज़ी में चेतावनी निर्देश दिया जाता है, जबकि नीचे वाले त्रिकोण में रंग के द्वारा चेतावनी निर्देश दिया जाता है। यह रंग लाल, पीला, नीला अथवा हरा होता है। त्रिकोण में दर्शाया गया लाल अथवा पीला रंग कीटनाशक की अत्याधिक विषाक्तता को दर्शाता है। अत: ऐसे कीटनाशकों का उपयोग करते समय बहुत सावधानी बरते जाने की आवश्यता होती है। विषाक्तता को लीथल डोज़ (औरल) द्वारा मापा जाता है। यह जो मात्रा होती है, जो मुंह के द्वारा आदि शरीर में पहुंच जाए, तो प्राणघातक सिद्ध होती है। सामान्यत: इसे मिलीग्राम प्रति किलोग्राम (मिलीग्राम / किलोग्राम) में दर्शाया जाता है। यह मात्रा जितनी कम होगी, कीटनाशक उतना ही विषैला होगा। नीचे दी गई सारणी में चेतावनी संकेतों को दर्शाया गया है।

कीटनाशक खरीदते समय सावधानियां

1. केवल वही कीटनाशक खरीदें, जिसकी सिफारिश विशेषज्ञ द्वारा वांछित कीट नियंत्रण के लिए की गई हो। केवल दुकानदार की सिफारिश से कीटनाशक का चुनाव ना करें।

2. कीटनाशक लाईसैंसी दुकान से खरीदें।

3. खरीदते समय पहले कीटनाशक के डिब्बे पर बैज संख्या, रजिस्ट्रेशन नंबर, निर्माण एवं समाप्ति की तिथि अवश्य देख लें।

3. कीटनाशक हमेशा सीलबंद हो, तब ही खरीदें।

4. कीटनाशक का केवल उतना ही बड़ा डिब्बा/बोतल खरीदें, जितना खेतों में एक बार उपयोग हो सके।

5. दवाईयों की खरीद का बिल पर्चे कटवा कर संभाल कर रखें। यदि कोई कीटनाशक दवाई के छिड़काव से हानि हो, तो खेती विभाग को बताएं तथा सबूत के तौर पर खरीदी हुई दवाईयों का बिल दिखा सकें। कानूनी कारवाई के समय यह बिल बहुत आवश्यक होता है।

6. बाकी स्टोर/गोदाम में अलमारी में कीटनाशकों को रखें। इनके साथ कोई खाने की सामग्री ना हो।

7. दवाईयों को खरीद कर घर लाते समय कंधे या सिर पर ढो कर ले जाएं।

यह अति आवश्यक है कि कीटनाशियों का सही एवं उचित तरीके से काम लाया जाए ताकि उपयोगकर्ता का स्वास्थ्य एवं सुरक्षा दोनों का पूर्ण तरीके से पालन हो सके।

कीटनाशकों को मिलाते समय सावधानियां

* डिब्बे में दिए गए पैम्फलेट को ध्यान–पूर्वक पढ़ें। उसमें प्रयोग मात्रा व लक्षित कीटनाशकों को प्रयोग में पहले पानी में मिलाने की जानकारी दी जाती है तथा कौन से कीटों को मारने में सक्षम होती है।

* कभी–कभी एक से अधिक कीटनाशकों का मिश्रण भी बनाना पड़ता है। प्राय: इस समय सावधानी ना बरतने पर किसान कीटनाशकों के सीधे सम्पर्क में आ जाते हैं, जोकि उन्हें नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए प्रयोग करते समय निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखें।

* मिश्रण/घोल हमेशा साफ पानी में और खुले हवादार स्थान पर ही बनाएं, जहां प्रकाश भी पर्याप्त हो।

* घोल को स्प्रेयर में ही बनाएं।

* अगर अलग बर्तन में बनाना हो, तो पॉलीथीन पहन कर काम करें।

* कीटनाशकों के पैकेट को काटने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले चाकू को किसी अन्य काम के लिए इस्तेमाल ना करें।

* भूल कर भी कीटनाशक के पैकेट को दांतों से ना काटें।

* हमेशा कीटनाशक की सिफारिश की गई मात्रा में ही मिलाएं। कभी भी अंदाजे से कीटनाशक मिश्रण का उपयोग अथवा छिड़काव ना करें।

* अलग–अलग समूह के कीटनाशक हैं, तो एक के बाद दूसरी प्रकार काम में लें।

* ऐसे कीटनाशी काम में ना लें, जिससे पत्तों पर रासायनिक जलन हो।

कीटनाशियां काम में लेने के बाद सावधानियां

1. बनी हुई कीटनाशी भण्डार में रख दें।
2. कभी भी कीटनाशी का घोल पम्प में ना छोड़ें। पम्प को ठीक से साफ करके ही भण्डार में रखें।
3. खाली डिब्बों को दूसरे काम में ना लें व इकट्ठा होने पर तोड़ कर करीब 2 फीट गहरा मिट्टी में दबा दें। कागज़ व प्लास्टिक आदि के डिब्बों को यदि जलाएं, तो धूएं के पास खड़े ना हों।
4. काम में लिए गए कपड़ों व अन्य सामग्री को ठीक प्रकार से धो लें।
5. कीटनाशी से काम करने के बाद ठीक से स्नान करें, साफ कपड़े पहन लें।
6. जो भी कीटनाशियां फसलों पर छिड़कें, उनका ब्यौरा रखें।
7. कीटनाशी छिड़के खेतों में कुछ समय के लिए किसी अन्य आदमी को ना घूमने दें।
8. इस बात का ख्याल रखें कि कीटनाशी छिड़की हुई फसल को कोई जानवर ना खाये।
9. कीटनाशी छिड़कने के बाद कम से कम 6 घंटे तक वर्षा ना हो तो ठीक है वरना दोबारा से दवा छिड़कनी चाहिए।
10. अन्तिम छिड़काव व फसल काटने में बताए गए समयान्तर का संशैलेषित ध्यान अवश्य रखें।

कीटनाशियां मिलाते व काम में लेते समय सावधानियां :

1. ठीक प्रकार से शरीर को बचाने वाले कपड़े पहनें व यदि इनमें कीटनाशी लग जाए, तो दूसरे साफ कपड़े पहन लें तथा हाथों में रबड़ के दस्ताने पहनें।

2. कीटनाशी छिड़कने वाला प्रशिक्षण प्राप्त किया हुआ, स्वस्थ व्यक्ति ही व उसके लिए ठीक प्रकार से कपड़े व अन्य सामान हो। उसके शरीर पर किसी प्रकार का घाव ना हो।

3. कीटनाशियां छिड़कने का काम करने वाले समय–समय पर खून की जांच करवाते रहें।

4. बहुत ज़हरीली कीटनाशी को काम में लेते समय अकेले ना रहें।

5. कीटनाशी को पानी में मिलाते समय किसी बच्चे या अन्य आदमी को पास में ना रहने दें व मिलाने के लिए लकड़ी का या लोहे का मोटा तार काम में लायें।

6. लेबल व समाचार–पत्रक को दोबारा से पढ़ें व उनमें दिए गए अनुदेश का पालन अवश्य करें।

7. कीटनाशी छिड़कने वाले पम्प की जांच कर लें कि कहीं से खराब ना हो।

8. त्वचा खास करके मुंह व आंखों का कीटनाशी से बचाव रखें।

9. द्रव रूप वाली कीटनाशियों को सावधानी से पम्प में डालें। चूर्ण रूप वाली कीटनाशियों के कण आदि मुंह पर ना गिर जाएं व गलती से ऐसा हो जाए, तो तुरन्त पानी व साबुन से बार–बार धोएं।

10. हमेशा हाथ, पांव तथा कपड़े आदि धोने के लिए पानी की काफी मात्रा पास में रखें।

11. कीटनाशी मिलाते या छिड़कते समय खाना, पीना व धूम्रपान करना सख्त मना है।

12. यह निश्चित कर लें कि कीटनाशी ठीक मात्रा में पानी में मिल गई है।

13. धूड़ा व रसायन का धुआं श्वसन क्रिया द्वारा अन्दर ना जाने दें।

14. हवा के विरुद्ध दशा में चल कर ना छिड़कें।

15. कभी भी मुंह से हवा लगाकर बन्द हुए नोज़ल की सफाई ना करें।

16. यह निश्चित कर लें कि छिड़काव करने वाली जगह तौलिया, साबुन व पानी उपलब्ध हो तथा कपड़ों का एक जोड़ा अलग से हो।

17. एक रोज में ज़रुरत हो, उतनी ही कीटनाशी साथ लेकर जाएं। इसे दूसरे बर्तन में विशेषकर बीयर या सॉफ्ट ड्रिंक की बोतल में डाल कर ना ले जाएं।

18. धूड़े के लिए सुबह या सायंकाल, हवा की गति 7 किलोमीटर प्रति घंटे से कम व तापमान 21 डिग्री सैल्सियस के आसपास हो, ऐसे हालात अच्छे रहते हैं।

19. फुहार के लिए सुबह या सायं:काल की बजाए दिन में, हवा की गति 10 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा ना हो व तापमान 32 डिग्री सैल्सियस से ज्यादा ना हो, ऐसे हालात अच्छे रहते हैं।

20. फूल आने पर फसलों पर बहुत कम छिड़काव सायं:काल ही करें, ताकि मधुमक्खियों को बचाया जा सके। चारागाह के रूख में हवा चले, तो छिड़काव ना करें।

21. कभी भी कीटनाशी को खेत में एकांत में ना छोड़ें।

22. कीटनाशी काम में लेते समय ज़हर का प्रभाव होते ही तुरन्त डॉक्टर के पास जाएं व कीटनाशी का डिब्बा या नाम लिख कर ले जाएं।

23. अगर खून में 'कोलीन एस्टरेज' सामान्य से कम हो तो कीटनाशी छिड़कने का काम ना करें।

24. कभी भी कीटनाशी छिड़कने वाले को उत्साहित ना करें कि ज्यादा समय तक या ज्यादा फसल पर छिड़केगा तो अधिक रुपए या ईनाम मिलेगा।

चेतावनी संकेत पहचान विषाक्तता परिणाम ओरल लीथल डोज़ (मिलीग्राम/किलोग्राम) उदाहरण

चेतावनी संकेत	पहचान	विषाक्तता परिमाप	ओरल लीथल डोज़ (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	उदाहरण
	ऊपर के त्रिकोण में अंग्रेज़ी के K आकार में हड्डियों के ऊपर खोपड़ी रखी होती है एवं अंग्रेज़ी में POISON (ज़हर) लिखा होता है। नीचे का त्रिकोण लाल रंग का होता है।	अत्यंत ज़हरीला	1–50	मोनोक्रोटोफॉस, ज़िंक फास्फाईड
	ऊपर के त्रिकोण में अंग्रेज़ी में POISON (ज़हर) लिखा होता है। नीचे का त्रिकोण पीले रंग का होता है।	अत्याधिक ज़हरीला	51–500	कार्बारिल, क्विनलफॉस
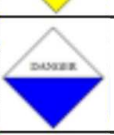	ऊपर के त्रिकोण में अंग्रेज़ी में DANGER (खतरनाक) लिखा होता है। नीचे का त्रिकोण नीले रंग का होता है।	औसत दर्जे का ज़हरीला	501–5000	मैलाथियान, थाइरम, ग्लायफोसेट
	ऊपर के त्रिकोण में अंग्रेज़ी में CAUTION (सावधान) लिखा होता है। नीचे का त्रिकोण हरे रंग का होता है।	कम ज़हरीला	>5000	मैंकोज़ेब, ऑक्सिफ्लोरफेन

त्योहारों के सीज़न में फूलों की कीमतें बढ़ीं, गेंदा 200 तो गुलाब 250 रुपए किलो

त्योहारों का सीजन शुरू होते ही फूलों की कीमतें अचानक बढ़ गईं। त्योहारों के चलते फूलों की मांग तेज़ी से बढ़ी है। वहीं, पहाड़ी इलाकों में लगातार बारिश से फूलों की खेती बर्बाद हो गई, जिसकी वजह से मंडियों में फूलों की सप्लाई कम और दाम आसमान छूने लगे है।

गेंदा फिलहाल 120 रुपए प्रति किलो बिक रहा था, उसका रेट सीधे 200 रुपए तक पहुंच गया। गुलाब 180 से बढ़ कर 250 रुपए प्रति किलो हो गया। व्यापारियों के अनुसार, यह शुरूआत है। आने वाले दिनों में जैसे-जैसे मांग बढ़ेगी, रेट और भी ऊपर जा सकते हैं।

पंजाब में विशेषकर पटियाला में बड़े पैमाने पर फूलों की खेती की जाती है। यहां करीब 50 एकड़ में इनकी खेती

होती है। मंजाल गांव के फूल उत्पादक गुरप्रीत सिंह शेरगिल के अनुसार, वह 14 एकड़ में गुदावरी व देसी गुलाब लगाते हैं। पिछले दिनों हुई बारिश के बाद कभी धूप, कभी छांव के कारण फूलों की पौध पर बुरा प्रभाव पड़ा है। जहां पहले 2 क्विंटल फूलों की फसल होती थी, अब वह घट कर 20 से 30 किलो रह गई। मांग ज्यादा, उत्पादन कम होने के कारण ही फूल महंगा बिक रहा है।

फूल कारोबारी अनिल यादव का कहना है कि हर साल त्योहारों में फूलों की मांग बढ़ जाती है, लेकिन इस बार बारिश ने सबसे ज्यादा असर डाला। शादी-ब्याह और धार्मिक आयोजनों में फूलों की खपत बढ़ने लगी है। हरियाणा की शाहबाद मंडी से फूल मंगवा कर काम चलाया जा रहा है।

3 एकड़ फसल बर्बाद हुई : गुरविंदर सिंह

मल्ला खेड़ी के दूसरे उत्पादक गुरविंदर सिंह ने बताया कि 15 एकड़ में फूलों की फसल लगी थी। वह खासकर गेंदा लगाते हैं। खराब मौसम से 3 एकड़ फसल बर्बाद हो गई। फसल 6 महीने में तैयार होती है और 80-90 क्विंटल फूल मिलते हैं। ज़िले में प्रति दिन औसतन 5 क्विंटल फूलों की खपत है, लेकिन उत्पादन 2-3 क्विंटल। बाकी मांग बाहरी मंडियों से पूरी हो रही है। बारिशों के कारण हफ्ते भर से फूलों की तुड़ाई का काम बंद है। आगे शुरू करेंगे।

------- शेष पृष्ठ 7 की -------

मूंग की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग, कीट एवं उनका प्रबंधन

पत्तियां गिर जाती हैं, फलियां या तो बनती नहीं या छोटी रह जाती हैं, जिसमें विकृत बीज बनते हैं।

रोग का प्रबंधन : कवकनाशी दवाएं जैसे कैराथेन (2 प्रतिशत), केलेक्सीन (0.1 प्रतिशत) या सल्फेक्स (0.3 प्रतिशत) घोल बना कर छिड़काव करें। बीज की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह में करें ताकि बीमारी को दूर किया जा सके। संक्रमित फसल के अवशेष को नष्ट कर दें।

8. गेरूवा या रस्ट रोग : पत्ती की ऊपरी सतह पर हल्के पीले छोटे-छोटे धब्बे दिखाई देते

है एवं पत्ती की निचली सतह पर भूरे लाल उभरे हुए स्पॉट के रूप में ये धब्बे होते हैं। संक्रमण फैलने पर फली एवं तने पर भी ये स्पॉट देखे जा सकते है। प्रकोप अधिक होने पर पत्ती की दोनों सतहों पर रस्ट रोग के स्पॉट फैल जाते है। इस रोग के प्रभाव से पत्ती सिकुड़ी एवं मुड़ी हुई हो जाती है।

रोग का प्रबंधन : रोग के लक्षण फसल की शुरू की अवस्था में दिखाई देने पर बिटरटानाल 25 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 1000 ग्राम प्रति हैक्टेयर या क्लोरोथैलोनिल 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 200 ग्राम, टेबूकोनाज़ोल 25.9 प्रतिशत ई.सी. 625 मिलीलीटर प्रोपिकोनाज़ोल 25 प्रतिशत ई.सी. 500-750 ग्राम प्रति हैक्टेयर का एक छिड़काव काफी प्रभावशाली रहता है।

फसल में निम्न कीटों का प्राय: असर देखा गया है :

बिहार की बालदार सुंडी :

पहचान एवं हानि की प्रकृति : प्रौढ़ कीट हल्के पीले रंग का होता है तथा इसके ऊपरी व निचले पंखों पर काले रंग के धब्बे होते हैं। इसकी आंखें तथा भृगिकाएं काले रंग की होती है। पूर्ण विकसित सुंडी 40-45 मिलीलीटर लम्बी दोनों किनारों पर काले तथा बीच में गन्दे पीले रंग के शरीर वाली होती है। इनका पूरा शरीर घने बालों से ढका होता है। कीट की सुंडियां प्रारम्भ में झुंड में पौधों की पत्तियों को खुरच कर खाती हैं। अधिक प्रकोप की दशा में पौधों के तने को छोड़ कर सारी पत्तियां खा ली जाती हैं। सुंडियां बड़ी होने पर पूरे क्षेत्र में फैल कर फसल को हानि करती है।

कीट का प्रबंधन :

* प्रकाशपाश का उपयोग करें।

* खेत में खरपतवारों को ना पनपने दें।

* इन्डोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस.सी. 500 मिलीलीटर या लेम्डासाइहैलोथ्रिन 4.9 प्रतिशत सी.एस. 500 मिलीलीटर या फैनवलरेट 20 प्रतिशत ई.सी. 500 मिलीलीटर का प्रति हैक्टेयर 500-1000 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

फली छेदक कीट (हेलीकोवार्पा आर्मीजेरा)

आर्थिक क्षति स्तर - 5 से

6 पतंगे प्रति गन्धपास प्रति रात्रि लगातार तीन रात्रि तक या 5 प्रतिशत प्रकोपित फली।

पहचान एवं हानि की प्रकृति : प्रौढ़ पतंगा पीले बादामी रंग का होता है। अगली जोड़ी पंख पीले भूरे रंग के होते हैं तथा पंख के मध्य में एक काला निशान होता है। पिछले पंख कुछ मटमैले सफेद से हल्के रंग के होते हैं तथा किनारे पर काली पट्टी होती है। सुंडियां हरे, पीले या भूरे रंग की होती हैं तथा पार्श्व में दोनों तरफ मटमैले सफेद रंग की धारी पाई जाती है। इसकी गिडारें फलियों के अंदर घुस कर दानों को खाती है। क्षति ग्रसित फलियों में छिद्र दिखाई देते हैं।

कीट का प्रबंधन :

* बीजों की रोपाई से पहले उन्हें इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफ.एस. की 7 मिलीलीटर मात्रा को प्रति किलोग्राम की दर से मिला कर उपचारित करना चाहिए।

* प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एसजी 0.2 ग्राम प्रति लीटर इंडोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. की 0.75 मिलीलीटर मात्रा को प्रति लीटर घोल बना कर प्रयोग करना चाहिए।

सफेद मक्खी :

पहचान एवं हानि की प्रकृति : ये कीट आकार में छोटे लगभग एक से डेढ़ मिलीमीटर लम्बे पीले रंग के शरीर वाले होते हैं, इनका पूरा शरीर सफेद चूर्ण से ढका होता है। इनके पंख सफेद होते हैं। शिशु तथा प्रौढ़ दोनों पत्तियों, कोमल टहनियों से रस चूस कर नुकसान पहुंचाते है। यह मक्खी उदर में पीला चित्रवर्ण रोग का विषाणु फैलाती है। अतिरिक्त अधिक रस चूसने के कारण यह मधुस्त्राव करती है, जिस पर काले कवक का आक्रमण हो जाता है तथा प्रकाश संश्लेषण क्रिया बाधित होती है।

कीट का प्रबंधन : * बीजों की रोपाई से पहले उन्हें इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफ.

एस. की 7 मिलीलीटर मात्रा को प्रति किलोग्राम की दर से मिला कर उपचारित करना चाहिए।

* इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 250 मिलीलीटर को 500 लीटर पानी में मिला कर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

फली से रस चूसने वाला कीट (क्लैवीग्रेला जिबोसा) :

पहचान एवं हानि की प्रकृति : प्रौढ़ बग लगभग 2 सैंटीमीटर लम्बा कुछ-कुछ हरे भूरे रंग का होता है। इसके शीर्ष पर एक शूल युक्त प्रवक्ष पृष्ठक पाया जाता है। उदर प्रोथ पर मज़बूत कांटे होते हैं। इसके शिशु एवं प्रौढ़ अरहर के तने, पत्तियों एवं पुष्पों व फलियों से रस चूस कर हानि पहुंचाते हैं। प्रकोपित फलियों पर हल्के पीले रंग के धब्बे बन जाते है तथा अत्याधिक प्रकोप होने पर फलियां सिकुड़ जाती है एवं दाने छोटे रह जाते हैं।

कीट का प्रबंधन :

* बीजों की रोपाई से पहले उन्हें इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफ.एस. की 7 मिलीलीटर मात्रा को प्रति किलोग्राम की दर से मिला कर उपचारित करना चाहिए।

* इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर 75 ग्राम स्पाईनोसैड 45 एस.सी. को 200 लीटर पानी में मिला कर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

माहू (एफिस क्रेक्सीवोरा) :

पहचान एवं हानि की प्रवृति : यह एफिड गहरे कत्थई अथवा काले रंग की बिना पंख अथवा पंख वाली होती है। एक मादा 8-30 बच्चों को जन्म देती है तथा इनका जीवनकाल 10-12 दिन का होता है। इसके शिशु एवं प्रौढ़ पौधे के विभिन्न भागों विशेषकर फूलों एवं फलियों से रस चूस कर हानि करते हैं।

कीट का प्रबंधन : * फसल पर कीटों के प्रकोप का सप्ताह अंतराल पर निरीक्षण करते रहना चाहिए।

* पीली पत्ती प्रकोपित पौधों को देखते ही सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।

* बालदार सुंडी के पतंगों को प्रकाश प्रपंच के द्वारा इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।

* तम्बाकू की सुंडी के अंडों एवं झुंड में खा रही सुंडियों को इकट्ठा करके सप्ताह में दो बार नष्ट कर देना चाहिए।

* तम्बाकू की सुंडी की एन.पी.वी. 250 लार्वी समतुल्य प्रति हैक्टेयर कीदर से सप्ताह के अंतराल पर दो-तीन बार सायं:काल छिड़काव करना चाहिए।

* सफेद मक्खी के आर्थिक क्षति स्तर पहुंचने पर दैहिक रसायन जैसे इमिडाक्लोप्रिड 250 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

* कीट का प्रकोप हो जाने पर बी.टी. 5 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 1.5 किलोग्राम इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 400 मिलीलीटर, फैनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मिलीलीटर, साइपरमेथ्रिन 10 ई.सी. 750 मिलीलीटर या डेकामेथ्रिन 2.8 ई.सी. 450 मिलीलीटर का प्रति हैक्टेयर की दर से 800-1000 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

उत्तर–पश्चिम भारत में अगस्त की ऐतिहासिक बारिश

इस माह भी होगा जल प्रलय

उत्तर-पश्चिमी भारत में इस अगस्त महीने में 265 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई, जो 2001 के बाद सबसे अधिक और 1901 के बाद से 13वीं सबसे अधिक बारिश है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आई.एम.डी.) के अनुसार, इस क्षेत्र में मौनसून के तीनों महीनों में सामान्य से अधिक वर्षा हुई है।

कुल मिलाकर 1 जून से 31 अगस्त तक उत्तर-पश्चिम भारत में 614.2 मिलीमीटर बारिश हुई, जो सामान्य (484.9 मिलीमीटर) से लगभग 27 प्रतिशत अधिक है। इस असामान्य वर्षा ने कई चरम मौसमी घटनाओं को जन्म दिया। पंजाब दशकों की सबसे भीषण बाढ़ से जूझा, जहां उफनती नदियों और टूटी नहरों के पानी से हज़ारों हैक्टेयर खेत जलमग्न हो गए और लाखों लोग विस्थापित हुए। हिमालयी राज्यों (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर) में बादल फटना, अचानक बाढ़ और भूस्खलन जैसी घटनाओं से पुल, सड़कें और घर बह गए।

दक्षिण भारत भी प्रभावित

दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत में अगस्त में 250.6 मिलीमीटर बारिश दर्ज हुई, जो सामान्य से 31 प्रतिशत अधिक है। यह 2001 के बाद तीसरी और 1901 के बाद 8वीं सबसे अधिक अगस्त वर्षा है। देश भर में अगस्त में 268.1 मिलीमीटर बारिश हुई, जो सामान्य से 5 प्रतिशत अधिक है। जून से अगस्त तक तीन महीनों में कुल 743.1 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से करीब 6 प्रतिशत अधिक है।

जून से अगस्त तक का हाल

- जून में 111 मिलीमीटर वर्षा हुई, जो सामान्य से 42 प्रतिशत अधिक थी।
- जुलाई में 237.4 मिलीमीटर वर्षा, सामान्य से 13 प्रतिशत अधिक।
- अगस्त में 265 मिलीमीटर वर्षा, सामान्य से 34.5 प्रतिशत अधिक।

सितम्बर में भी सामान्य से अधिक बारिश की चेतावनी

देश में सितम्बर में सामान्य से अधिक बारिश होने का अनुमान है। इस मौनसून मौसम में पहले ही देश के कई हिस्सों में भारी बारिश की वजह से आपदाएं आ चुकी हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आई.एम.डी.) ने यह जानकारी दी। आई.एम.डी. का अनुमान है कि सितंबर 2025 के लिए मासिक औसत वर्षा 167.9 मिलीमीटर के दीर्घकालिक औसत के 109 प्रतिशत से अधिक होगी। पूर्वानुमान के अनुसार, अधिकांश क्षेत्रों में सामान्य से लेकर सामान्य से अधिक वर्षा होगी। हालांकि, पूर्वोत्तर और पूर्वी भारत के कुछ क्षेत्रों, साथ ही सुदूर दक्षिणी प्रायद्वीपीय भारत के कई हिस्सों और उत्तर-पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में सामान्य से कम वर्षा होने का अनुमान है। एक ऑनलाइन संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, आई.एम.डी. के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने चेतावनी दी कि भारी वर्षा से सितंबर में उत्तराखंड में भूस्खलन और अचानक बाढ़ आ सकती है और दक्षिणी हरियाणा, दिल्ली और उत्तरी राजस्थान में सामान्य जनजीवन बाधित हो सकता है। उन्होंने कहा कि, "उत्तराखंड में कई नदियां निकलती हैं। इसलिए, भारी बारिश का मतलब है कि कई नदियां उफान पर होंगी और इसका असर निचले इलाकों के शहरों और कस्बों पर पड़ेगा। इसलिए, हमें इसे ध्यान में रखना चाहिए।" उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में महानदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में भी भारी बारिश का अनुमान है।

पंजाब में फैल सकती है महामारी

4 चरणों में हो सकता है लोगों को हैल्थ अटैक

हैजा, डायरिया, मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, टाइफाइड, हैपेटाइटिस के अलावा सांपों के डसने, फंगल, बैक्टीरिया इंफैक्शन का बढ़ जाएगा खतरा

पंजाब में महामारी फैल सकती है। बाढ़ और बरसात प्रदेश के लगभग सभी ज़िलों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की मानें तो प्रदेश में 4 चरणों में हैल्थ अटैक होने की संभावना है। बाढ़ के बाद पहले चरण में जलजनित और मच्छरों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों जैसे हैजा, डायरिया, टाइफाइड, हैपेटाइटिस ए और गैस्ट्रोएंट्राइटिस जैसी बीमारियां लोगों को चपेट में ले सकती हैं। रुके हुए पानी में मच्छरों से होने वाले रोग जैसे मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया के मामलों में बढ़ोत्तरी का अंदेशा है।

बाढ़ के पानी में मरे हुए जानवरों, सीवरेज और रसायन युक्त पानी की वजह से न सिर्फ त्वचा संक्रमण के पेशैंट बढ़ सकते हैं। पानी में सांप के अलावा अन्य जानवरों के काटने का भी खतरा है। पानी के अंदर मौजूद चोटिली वस्तुएं लोगों को घायल कर सकती हैं। दूसरे चरण में फंगल संक्रमणों से ग्रसित पेशैंट्स की संख्या में इजाफा देखने को मिल सकता है क्योंकि गीले फर्नीचर में मौजूद फंगस लोगों को सांस की समस्या दे सकते है। लोगों को श्वास रोग, एलर्जी, निमोनिया, फेफड़ों की समस्या हो सकती है और दमा पेशैंट्स को दमा के अटैक होने की संभावना है। तीसरे चरण में बच्चों, बुजुर्गों के साथ-साथ गर्भवती महिलाओं को समस्या हो सकती है। शूगर, ब्लड प्रैशर पेशैंट्स जिनकी शूगर और बी.पी. की न तो समय पर जांच हो सकेगी और न ही खाने को दवाएं मिल सकेंगी। उन्हें कई तरह की दिक्कत आएगी। जिन पेशैंट्स की डायलिसिस और कीमोथैरेपी चल रही है, उन्हें दवा की समय पर डोज नहीं मिल सकेगी।

चौथे चरण में लोगों को मानसिक समस्या उत्पन्न हो जाएगी। जिन लोगों के घर, संपति बाढ़ के पानी में बह जाएगी, उनके लिए आर्थिक नुकसान सहना आसान नहीं होगा और वह मानसिक रोगी बन जाएंगे।

बांटा जा रहा है पीने के लिए साफ पानी

पंजाब की डायरैक्टर हैल्थ सर्विस डॉ. हितेंद्र कौर का कहना है कि लोगों को जलजनित और मच्छरों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए लोगों के पीने के लिए साफ पानी पहुंचाया जा रहा है। क्लोरिन की गोलियां वितरित की जा रही हैं। फोगिंग की जा रही है ताकि मच्छरों की ब्रीडिंग रुक सके।

लोगों को एडवाइजरी जारी की गई है कि वह अगर घर में है, तो उबला हुआ पानी ही पीएं। मच्छरों से बचने के लिए मोसकियुटो रैपेलेंट का इस्तेमाल करें। शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनें। उनका कहना है कि स्वास्थ्य विभाग की टीमें लगातार लोगों की सहायता के लिए हैल्थ कैंप लगा रही हैं। लोगों को दवाएं वितरित की जा रही हैं। एम्बुलैंस भी काम कर रही हैं।

लोगों को लग सकते हैं त्वचा के रोग

जी.एम.सी.एच.-32 के डायरैक्टर प्रिंसीपल एवं त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. जी. धामी का कहना है कि बारिश और गर्मी मिल कर हवा में नमी की मात्रा बढ़ाती है और इसकी वजह से त्वचा पर कई तरह के फंगल इंफैक्शन, घमौरियां होने का खतरा बढ़ जाता है। बारिश थमने के बाद कई जगह पर पानी खड़ा हो जाएगा और उसमें मच्छरों की ब्रीडिंग बढ़ेगी और ऐसे में लोगों को चाहिए कि वह अपने घर के आस-पास पानी को ज्यादा देर खड़ा न रहने दें। अगर पानी खड़ा है, तो उसमें दवा का छिड़काव करवाएं ताकि वेक्टर रोगों से वह खुद को बचा सकें।

बाढ़ के बाद लोग बन सकते हैं कई रोगों का ग्रास

चंडीगढ़ में सैक्टर 33 स्थित बेदी हॉस्पिटल के विशेषज्ञ डॉ. विक्रम सिंह बेदी का कहना है कि बाढ़ के बाद कई तरह की बीमारियां लोगों को ग्रास बना सकती हैं। बाढ़ के पानी में मरे हुए जानवरों की वजह से वातावरण में कई तरह के संक्रामक रोग उतपन्न हो सकते हैं। फंगल, बैक्टीरियल इंफैक्शन लोगों को कई किस्म की एलर्जी और बीमारियां देंगी। सांस के रोग, अस्थमा के अटैक, हैजा, डायरिया, पेट की समस्या लोगों को घेर सकती हैं।

खड़े पानी से गुजरने पर सांप और कई तरह के कीट लोगों को काट सकते हैं। एंटी स्नेक वैनम के अलावा ऐसी दवाओं का स्टॉक करना होगा, जिसमें यह पता चल सकेगा कि किस जानवर के काटने से व्यक्ति बेहोश हुआ है। डॉ. बेदी का कहना है कि लोगों को मानसिक रोग से बचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा काउंसलर्स की नियुक्ति करनी होगी, क्योंकि लोग अपने घर और संपत्ति खो चुके होंगे।

व्यवसायिक तकनीकी, पशुपालन और समन्वित कृषि प्रणाली आधारित कृषि आवश्यक – कुलपति डॉ. मिश्रा

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन शास्त्र विभाग और आसा, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में टिकाऊ खेती विषय पर 8 दिवसीय प्रशिक्षण के तृतीय बैच का भव्य समापन कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा के मुख्यआतिथ्य, संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतु की अध्यक्षता एवं डॉ. के.के. त्रिवेदी आसा, भोपाल के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। मुख्यअतिथि की आसंदी से कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने अपने संबोधन में व्यवसायिक तकनीकी का उल्लेख करते हुये पशुपालन और समन्वित कृषि प्रणाली के अहम बिंदुओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. जी.के. कौतु ने अपने उद्बोधन में मृदा पर्यावरण और जीवों के स्वास्थ्य को निरंतर कायम रखने के लिये स्थानीय स्थिति को बेहतर ढंग से समझकर उसके अनुकूल तकनीकी के इस्तेमाल करने की जरूरत पर जोर दिया। डॉ. के.के. त्रिवेदी, चीफ ऑर्गेनाइजिंग ऑफीसर, आसा भोपाल ने कहा कि आसा, विज्ञान आधारित तकनीकों पर विशेष महत्व देती है। जिससे फील्ड में कार्य करने पर अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। विगत 2 बैचों के प्रशिक्षणार्थियों के फीडबैक से फील्ड में कार्य करने की शैली और प्रभाव में बहुत अच्छे परिणाम मिले है, और भविष्य में भी ऐसे ही कार्यक्रम विश्वविद्यालय के साथ मिलकर करने की इच्छा जाहिर की है।

रसायनयुक्त खेती की ओर बढ़ते कदम

नौणी विश्वविद्यालय लंबे समय तक टिकने वाले सेब उगाए

नौणी यूनिवर्सिटी ने मशोबरा, रोहड़ में प्राकृतिक खेती से उगाए सेब, ड्यूरेबिलिटी और मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढ़ी

रसायनयुक्त खेती से सेब के बगीचों को हो रहे नुकसान के बीच नौणी विश्वविद्यालय ने प्राकृतिक खेती से सेब उत्पादन में सफलता हासिल की है। शिमला के मशोबरा और रोहड़ में किए गए ट्रायल में इस तकनीक से न सिर्फ बेहतरीन और लंबे समय तक टिकने वाले सेब तैयार हुए, बल्कि ज़मीन की खोई हुई उर्वरा शक्ति भी वापस लौटी।

विश्वविद्यालय के रिसर्च में पाया गया कि प्राकृतिक खेती से उगाए गए सेब की ड्यूरेबिलिटी और गुणवत्ता रासायनिक खेती के सेबों से कई अधिक है। प्राकृतिक खेती से मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा में वृद्धि दर्ज की गई है। नौणी विश्वविद्यालय की वरिष्ठ वैज्ञानिक व हैड के.वी.के. रोहड़ू डॉ. ऊषा शर्मा ने बताया कि यह तकनीक सेब उत्पादन को अधिक टिकाऊ, लाभकारी और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकती है। दावा किया जा रहा है कि प्राकृतिक खेती से तैयार सेब के बगीचों में इस तरह का कोई रोग नहीं पनपा है। सेब का बगीचा पूरी तरह से सेफ है। डॉ. ऊषा शर्मा ने कहा कि बागवानों को सेब के बगीचों में मल्टी क्रॉप तैयार करने के लिए कहा जा रहा है, जिससे ज़मीन की ऑर्गेनिक कार्बन बढ़ने में मदद मिल सके। प्राकृतिक खेती से तैयार सेब में शूगर कंटेंट अच्छा पाया गया है, जो स्वास्थ्य के लिहाज से कहीं बेहतर है। सेब जांच के लिए फ्रूट सैंपल नौणी विश्वविद्यालय की लैब में जांच के लिए भेजा गया। टैस्ट में इसकी स्टोरेज क्षमता भी अन्य सेब के मुकाबले बेहतर पाई गई है। सेब की सेल्फ लाइफ ज्यादा पाई गई है।

नौणी विश्वविद्यालय 2400 वर्ग मीटर क्षेत्र में कर रहा है सेब की प्राकृतिक खेती

नौणी विश्वविद्यालय ने शिमला के मशोबरा और रोहडू में 1200-1200 वर्ग मीटर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती से सेब की पैदावार कर रहा है। विश्वविद्यालय ने 2020 में इस तकनीक से सेब की पैदावार करना शुरू किया था, जिसके अब सार्थक परिणाम आने शुरू हो गए हैं। पौधों पर जीवामृत पद्धति से तैयार घोल का छिड़काव करते हैं। इसमें लस्सी, सौंठ और बीजामृत से तैयार घोल का छिड़काव किया जाता है। सेब की सैटिंग से पहले और बीच-बीच में यह छिड़काव किया जाता है। बगीचों में मल्टी क्रॉप जैसे राजमा, माश यह यह दूसरी अन्य सब्ज़ियां उगाई जाती हैं, जिससे ज़मीन में ऑर्गेनिक कार्बन बनती है। यह सेब के लिए पोषक तत्व प्रदान करती है।

कपास आयात पर शुल्क छूट 2025 के अंत तक बढ़ाई गई

फरवरी, 2021 में कपास पर 11 प्रतिशत का आयात शुल्क लगाया गया था, जब देश का उत्पादन 3.5 करोड़ गांठ था, जबकि आवश्यकता 3.35 करोड़ गांठ की थी।

अमेरिका द्वारा 50 प्रतिशत टैरिफ लागू होने के बाद, वित्त मंत्रालय ने कपास आयात शुल्क पर छूट को तीन महीने और बढ़ाकर 31 दिसंबर, 2025 कर दिया।

इस कदम से भारतीय कपड़ा उद्योग को दीर्घकालिक कपास आयात ऑर्डर देने में मदद मिलने की उम्मीद है।

इससे पहले, सरकार ने 19 अगस्त 2025 से 30 सितंबर, 2025 तक कपास पर आयात शुल्क में छूट दी थी। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, "निर्यातकों को और अधिक समर्थन देने के लिए, केंद्र सरकार ने कपास पर आयात शुल्क छूट को 30 सितंबर से 31 दिसंबर, 2025 तक बढ़ाने का फैसला किया है।"

भारत का कपास उत्पादन फसल वर्ष 2022-23 में लगभग 33.7 मिलियन गांठ (प्रत्येक 170 किलोग्राम) से घटकर 2024-25 में अनुमानित 30.7 मिलियन गांठ रह गया है, जिससे मिलों को आयात बढ़ाने पर मजबूर होना पड़ रहा है।

व्यापार संबंधी प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने के लिए रणनीतिक कदम

भारतीय वस्त्र उद्योग परिसंघ ने कहा है कि कपास पर आयात शुल्क में छूट से भारतीय वस्त्र और परिधान क्षेत्र को 'बेहद जरूरी' मदद मिलेगी, जो वर्तमान में भारतीय वस्तुओं पर लगाए गए 50 प्रतिशत अमेरिकी टैरिफ से जूझ रहा है।

कपास पर आयात शुल्क हटाने की मांग कपड़ा उद्योग लंबे समय से कर रहा है। CITI के एक विश्लेषण से पता चला है कि 2015-16 और 2024-25 के बीच, कपास के आयात ने औसतन कुल कपास की मांग का केवल 5.8 प्रतिशत ही पूरा किया है।

दक्षिणी भारत मिल्स एसोसिएशन (सिमी) ने शुल्क मुक्त आयात की अवधि को 'समय पर मिली राहत' बताते हुए इस आशंका को खारिज कर दिया कि कपास सीजन की शुरुआत में मिलने वाली छूट कपास किसानों को प्रभावित कर सकती है।